चतुर्थ अध्याय

'कब तक पुकारूँ' उपन्यास में आँचलिकता --

चतुर्थ अध्याय

`कब तक पुकारूँ` उपन्यास में आँचलिकता --

१) `कब तक पुकारूँ` की संक्षिप्त कथावस्तु --

उपन्यास के नायक करनट सुखराम का सम्बन्ध एक ठाकुर वंश से था। कुछ पीढी पहले अधूरे किले की मालकिन ठकुराईन ने एक दरबान से अपना अनैतिक सम्बन्ध स्थापित कर लिया, जिसके कारण उसकी संतान ठाकुर न कहलाकर नट कहलाने लगी। उसी वंश में सुखराम का जन्म हुआ। सुखराम नटों का पेशा करता हुआ भी अपने को ठाकुर समझाता था। बचपन में ही माता-पिता की मृत्यु हो जाने के कारण वह इसीला नट के साथ रहने लगा। कालान्तर में उसका विवाह इसीला की पुत्री प्यारी से हो गया। सुखराम प्यारी के साथ गाँव-गाँव घूमकर खेल दिखाता था। प्यारी भी लोगों के साथ अपना मौसल सम्बन्ध स्थापित कर धन कमा लेती थी, जिससे दोनों प्रसन्न रहा करते थे। कुछ दिन के पश्चात् एक सिपाही रुस्तम-खाँ ने प्यारी को रखैल के रूप में अपने घर रख लिया। इससे सुखराम को अत्यंत मानसिक पीडा हुई, किन्तु प्यारी से वह अपना सम्बन्ध बनाये रखा। कुछ दिन बीत जाने के बाद उसने कुर्मी की पत्नी कजरी से अपना विवाह कर लिया। इस घटना से प्यारी को गहरा आघात लगा, किन्तु वह अपनी विवशता के कारण सुखराम का विरोध न कर सकी। इसी समय प्यारी और रुस्तम-खाँ दोनों अत्यंत बीमार पड गये। सुखराम अपने जडी बूटियों से उन दोनों की दवा करने लगा। एक दिन उसने बाँके से धूपो चमारिन की रक्षा कर दी, जिसके कारण बाँके उसका शत्रु हो गया और उससे बदला लेने की तैयारी करने लगा। कुछ लोगों के साथ बाँके ने उसपर हमला भी कर दिया, किन्तु इसमें सुखराम

के साथ उसे भी गहरी चोट लगी । चमारों ने सुखराम की रक्षा की और उसे डेरे पर पहुँचा दिया । थोड़े समय में ही सुखराम पूर्ण स्वस्थ हो गया । एक दिन वह कजरी को प्यारी के पास छोड़कर बाजार चला गया और लौटते समय उसने रोती हुई धूपो को देखा । धूपो के पास जाने के बाद उसे मालुम हो गया कि बाँके ने उसके साथ बलात्कार किया है । सुखराम के समझाने पर भी धूपो ने आत्महत्या कर ली, जिसके कारण चमारों में उत्तेजना फैल गई । सभी लोग बाँके से बदला लेने के लिए पुलिस रूस्तम-खाँ के पास पहुँच गए, क्योंकि बाँके उस समय वहीं था । रूस्तम-खाँ और बाँके शराब पीकर धूपो और सुखराम को निंदा करने लगे । उन दोनों की नीचता से क्षुब्ध होकर कजरी और प्यारी ने क्रमशः बाँके और रूस्तम-खाँ की हत्या कर दी । इसी समय चमारों का समूह भी घर के पास आ गया और एक व्यक्तिने उस घर में आग लगा दी, जिसके कारण प्यारी और कजरी दोनों संकट में पड़ गई । जलते हुए घर में प्रवेश कर सुखराम ने दोनों की रक्षा की और उन्हें लेकर करनटों के समूह में भाग गया । कुछ दिन के बाद वह गाँव की स्थिति जानने के लिए वापस आया और थाने में पकड़ लिया गया । थाने में उसका परिचय करनटों के कैदी राजा से हुआ । दोनों थाने की खिड़की काटकर भाग गए । राजाने सुखराम को अपना वजीर बनाया । उसी समय प्यारी सख्त बीमार पड़ गई और कुछ दिन के बाद मर गई । एक दिन सुखराम और कजरी पहाड़ पर टहल रहे थे कि उन्होंने एक स्त्री को चिल्लाते हुए देखा । दोनों ने जाकर मेम सूसन को डाकूओं से छुड़ा लिया और उसको घर पहुँचा दिया । सूसन ने प्रसन्न होकर उन दोनों को अपने यहाँ नौकरी दी । एक दिन सूसन के यहाँ लारेंस नामक एक अंग्रेज आया और वहीं रहने लगा । सूसन के पिता उसे पुत्रवत स्नेह देने लगे । एक दिन लारेंस ने सूसन के साथ बलात्कार किया, जिससे वह चिल्लाने लगी। उसकी आवाज सुनकर कजरी वहाँ पहुँची और उसे छुड़ाने का प्रयास करने लगी । लारेंस ने गर्भवती कजरी के पेट में लात मार दी, जिसके कारण वह बेहोश होकर गिर पड़ी। कुछ देर के पश्चात सुखराम वहाँ आ गया और उसने लॉरेंस को बुरी तरह पीटा । वृध्द अंग्रेज के आने पर सुखराम ने सारी घटनाओं को व्यक्त कर दिया । वृध्द ने लारेंस

को बुरी तरह पीटकर यूरोप भेज दिया, किन्तु सूसन गर्भवती हो गई। सामाजिक प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए वृध्द ने सूसन को सुखराम और कजरी के साथ बम्बई में एक अस्पताल में भेज दिया। बम्बई में कजरी की मौत हो गई और सूसन को लड़की पैदा हुई। सुखराम उस नवजात बालिका को लेकर गाँव चला आया और कजरी की लड़की बताकर उसका पालन-पोषाण करने लगा तथा उसका नाम चंदा रख दिया। चंदा बड़ी होनेपर उस गाँव के ठाकुर के लड़के नरेश से प्रेम करने लगी। ठाकूर ने चंदा को अनेक प्रकार की यातनाएँ दी, किन्तु उसके प्रेम में कोई अन्तर नहीं आया। अन्त में सुखराम ने चंदा का विवाह नीलू करनट से कर दिया, किन्तु वह नरेश के प्रेम में भागकर मायके चली आयी। उसी समय वृध्द अंग्रेज का पत्र भी आया, जिससे उसे अपने जीवन का रहस्य मालूम हो गया। वह पागलों की तरह अधूरे किले में भागने लगी। अत्यंत विक्षुब्ध होकर सुखराम ने चंदा की हत्या कर दी, जिसके कारण उसे सजा हो गई। चंदा की मृत्यु से नरेश भी पागल हो गया। सुखराम को सजा होती है। इस प्रकार इसकी संक्षिप्त कथावस्तु है।

२) <u>कथावस्तु के प्रकार</u> --

कथावस्तु किसी भी कथा साहित्य का प्रधान तत्व है। उपन्यास की कथावस्तु ऐसी हो जिसमें मानव स्वभाव के अनेक रंग तथा मानव जीवन के विविध प्रकार चित्रित हो। उपन्यास की कथावस्तु केवल मनोरंजन करने वाली न होकर उसमें शिक्षा देनेवाली महत्वपूर्ण बात हो, उसमें सजीवता हो। उपन्यास की कथावस्तु के निम्न प्रकार --

१) सामाजिक कथावस्तु -
२) ऐतिहासिक कथावस्तु -
३) पौराणिक कथावस्तु -
४) समस्यात्मक कथावस्तु -
५) मनोविश्लेषणात्मक कथावस्तु और
६) प्रादेशिक कथावस्तु।

` कब तक पुकारूँ ` की कथावस्तु सामाजिक कथावस्तु है। इसमें राजस्थान और ब्रज प्रदेश में फैली नट जाति का यथार्थ चित्रण किया है। इसके साथ-ही साथ इस उपन्यास में सुखराम की कथा आधिकारिक कथा है ,और चंदा-नरेश की कथा, चंदा-नीलू की कथा, धूपो चमारिन की कथा,डाकू की कथा आदि सभी गौण कथाएँ है।

३) कथावस्तु में जिज्ञासा तत्व --

कथानक ऐसा होना चाहिए जिसके प्रति पाठकों में रुचि आरंभ से लेकर अन्त तक रमी रहे। सफल कथानक वही कहलाता है जो आरंभ में ही पाठकों के औत्सुक्य को जगा दे और ज्यों-ज्यों वह खुलता जाए उनकी उत्सुकता उत्तरोत्तर बढती जाएँ। जहाँ पात्रों की सजीवता उनके बोधगम्य होने में है, वहाँ कथानक की सजीवता इसमें है कि वह पग-पग पर पाठकों को आश्चर्यचकित करता जाएँ। यदि कथानक उपन्यास के बीच में ही पूरा खुल जाएगा और पाठक को जानने के लिए कुछ शेष नहीं रह जाएँगा तो उसकी उत्सुकता मंद पड जाएगी और वह निराश होकर उपन्यास को बंद कर देगा।

कथावस्तु में जिज्ञासा तत्व शीर्षक से ही आरंभ होता है। ` कब तक पुकारूँ ` यह शीर्षक आरंभ से ही पाठकों के मन में जिज्ञासा निर्माण करता है। किसको पुकारा,कब पुकारा,क्यों पुकारा,किसलिए पुकारा आदि सवाल पाठकोंके मन में बार-बार आते है। और पाठकों को सोचने के लिए बाध्य करते है।

चंदा सुखराम की मानस कन्या है। वह ठाकुर के बेटे नरेश से प्यार करती है। वह भीसुखराम को भौन्ति ठाकुर वंश से अधिकार एवं गौरव प्राप्त करने के लिए लालायित है। वह अपने आपको ठकुराईन महसूस करती है। परन्तु वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं होती। इस तरह सुखराम और चंदा दोनों भी उस अधूरे किले पर अधिकार प्राप्त करना चाहते है। परन्तु वे असफल रहते है। उनकी असफलता को देखकर शायद लेखक को यह लगा कि दोनों किसी-न-किसी

उपलब्धि के लिए पुकार रहे है। यद्यपि यह पुकार सुनी नहीं गई तथापि पुकारना बंद नहीं हुआ। इसी नाते यह पुकार ` कब तक पुकारूँ ` के रूप में व्यक्त है।

` कब तक पुकारूँ ` शीर्षक ही पुरा में रहस्यात्मक है। यह रहस्य सुखराम और चंदा से भी जुडा है। दोनों भी अधिकार एवं गौरव प्राप्ति के लिए पुकार लगाते है। उनकी पुकार कब पुरी होगी, यह निश्चित नहीं कहा जा सकता। परन्तु यह पुकार बंद नहीं होगी, थकेगी भी नहीं क्योंकि इस पुकार में अधिकार एवं गौरव की माँग प्रबल है। इसमें फिर उस माँग को भी सम्मिलित किया जा सकता है, जिनके कारण उसके अधिकारों का हनन हुआ है।

` कब तक पुकारूँ ` उपन्यास की कथावस्तु में प्रारंभ से लेकर अन्त तक जिज्ञासा तत्व निहित है। प्रारंभ में लेखक अपने पाँव के फोडे का इलाज करवाने के लिए सुखराम के पास आता है। सुखराम उन्हें जडी-बुटी देकर उनका इलाज करते-करते उन्हें अधूरे किले की कहानी बताता है -- जैसे --

` मैंने कहा :` वह क्या है ? `
सुखराम ने कहा : रोज तो देखते ही हो।`
मैंने कहा : किल्ला है। किसने बनवाया था ?`
सुखराम ने उत्तर दिया : उसी राजा के बेटे ने।`
मैंने कहा :` छोटा ही है।`
` रहं गया है।`
मैंने पुछा :` क्या मतलब ?`
` अधूरा किला है।` [१]

लेखक और सुखराम की बातों से अधूरे किले की कथा आरंभ होती है। और कथा में औत्सुक्य बढता ही रहता है और पाठक उसे सुनने के लिए अधीर होते है। इसी के बीच में ही चंदा-नरेश की प्रेम कहानी आरंभ होती है।

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.९।

नरेश ठाकुर का बेटा है और चंदा करनट सुखराम की बेटी है। इसीकारण उन दोनों का मिलन नहीं हो पाता। एक जगह नरेश के पिताजी परेशान होकर कहते है --

` मैंने कहा : आखिर बात क्या है ? लगती है वह अंग्रेज-सी , परेशान आप है।`

` मै न होऊंगा तो होगा और कौन ?`

` क्यो ? आपका उससे सम्बन्ध ही क्या ?`

` बडे कुँवर को जाके ढूँढो इस वक्त।

` आखिर मतलब क्या है आपका ?`

बेटा किसी पेड के नीचे होगा और चंदा - चंदा कहकर आहे भर रहा होगा।` [१]

संक्षेप में उपन्यास का प्रारंभ आकर्षक एवं पाठकों को प्रेरित करनेवाला है। उपन्यास में आगे सुखराम और प्यारी की कथा, सुखराम और कजरी की कथा आदि कथाएँ पाठकों का औत्सुक्य बढाती है। आगे रामा की नाती की बीमारी की कथा दृष्ठव्य है। जैसे --

` बूढी रामा का नाती बीमार था। वह मुझे दिखाई दी। मैंने पुकारा :` कैसा है अब ?`,` मोतीझारा और ठंड दोनों का बुखार है, बचेगा नहीं। बुढियाँ के आँखों में आँसु आ गएँ। उसने कहा :-` रात भर आग जलाते रहे, फिर भी बर्राता रहा।` [२]

ऐसे प्रसंगों के माध्यम से कथावस्तु रोचक बनती है। और पाठकों के मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है। आगे करनटों के राजा की कथा, सुखराम-प्यारी की कथा आती है। जीवन से तंग आकर एक जगह प्यारी कहती है --` ये दुनियाँ नरक है। हम गन्दे कीडे है। तुने यह संसार ऐसा क्यों बनाया है, जहाँ आदमी

---

१ डॉ. रांगेय राघव ,` कब तक पुकारूँ` - पृ.११।

२ वही पृ.१००।

कहता है तो उसके लिए दर्द तक नहीं होता ? यहाँ पाप इतना बढ गया है कि गरीब और कमीना आदमी कोठीबन बनकर अपने पेट के लिए अपनी अच्छी देही को गंदा बना लेता है। यहाँ एक आदमी दबता है, पर हम तो कमीन है। वो बडे लोग क्यों करते है ऐसा ? क्या वे अपने धन और हुकूमत के लिए आदमी पर अत्याचार करने से नहीं काँपते ? तू चुप है। तू जबाब नहीं देती। नटनी की छोरी पर जवानी आती है और गन्दे आदमी उसे बेइज्जत करते है फिर मी वह रंडी की तरह जिए जाती है। मर क्यों नहीं जाती। हम सब मर क्यों नहीं जाते।"[१]

अन्त मे जब चंदा को अपने असलियत का पता चलता है तब वह पागल की तरह अधूरे किले की ओर जाने लगती है। सुखराम उसे रोकने का प्रयास करता है। एक जगह चंदा कहती है --

"उसने कहा :" बाबू मैया।"
"क्या है ?" मैने पुछा।
"जानते हो, मै कौन हूँ ?" उसने कहा:" नरेश मेरा है।
नरेश मेरा है मै अंग्रेज हूँ, मै नटनी नहीं हूँ .... ।"[२]

चंदा के उपर ठकुरानी का भूत सवार है और वह इसकी पहँचान देती है। नरेश मी चंदा की मौत से पागल होता है। और कहता है --

"चंदा ! तू मुझे छोडकर चली गई है। नहीं ,मै कायर नहीं हूँ। मैने तेरा अपमान किया था। मुझे क्षमा कर। आज मै तेरे सामने हाँथ खोलकर मीख माँग रहा हूँ।" वह हँसा : अरे ! तू तो मेम थी, ठकुरानी बन गई आज ! तू वहीं तो जाना चाहती थी !! चली गई !!! पर मुझे तो यहीं छोड गई !!! क्या मै नहीं आ सकता वहाँ ?"[३]

संक्षेप में "कब तक पुकारूँ" उपन्यास के कथावस्तु मे जिज्ञासा तत्व आरंभ

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.३७८।
२ वही पृ.६२८।
३ वही पृ.६३४।

से लेकर अन्त तक है। लेखक ने राजस्थान और ब्रज प्रदेश में फैली नट जाति का यथार्थ चित्रण किया है। प्रारंभ में चंदा-नरेश की कथा, बीच में सुखराम-प्यारी, सुखराम-कजरी कीकथा बताई है और उपन्यास का अन्त दु:खात्मक करके पाठकों को सोचने के लिए बाध्य किया है।

४) कथावस्तु में संघर्ष तत्व --

आरंभ से ही मनुष्य संघर्ष प्रिय रहा है। उपन्यासों में भी जगह-जगहों पर संघर्ष का चित्रण दिखाई देता है। वैसे तो संघर्ष के दो प्रकार है एक अन्तरंग संघर्ष जहाँ मनुष्य के मन में द्वन्द चलता रहता है। दूसरा है बहिरंग संघर्ष। इसमें शारीरिक संघर्ष या दो व्यक्ति या दो दलों का संघर्ष है।

`कब तक पुकारूँ` उपन्यास की कथावस्तु में संघर्ष कहीं जगह दिखाई देता है। अधिक मात्रा में बहिरंग संघर्ष दिखाई देता है। सुखराम और बाँके के संघर्ष का चित्रण निम्नप्रकार से हुआ है --

` घेर लो। बाँके चिल्लाया।
हरहराकर उसके लठैत यार कुद आएँ। सुखराम अब बचाव के पैंतरे बदलने लगा। वह तेजी से कुद जाता।
सुखराम ने कहा :` तू कायरों की लढाई लडता है। एक एक करके क्यों नहीं आ जाते।`
बाँके ने कहा :` राजा क्यों फौज बनाते है।`
` अरे तू राजा हो गया कुत्ते।`
` संपल देख।`[१]

दूसरी जगह सुखराम और डाकू का सरदार इन दोनों का संघर्ष है। इसमें दोनों ही क्रुध्द हुए है। इसका चित्रण दृष्ठव्य है --

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.१७२।

'सरदार को अपमान ने आहत किया । उसने जोर से झटका दिया, एक, दोन, तीन पर सरदार कोशिश करके हार गया । हाथ नहीं छुटा, नहीं छुटा, सरदार के पसीने चुचाते देखकर स्त्री हँसी ।' [१]

उपन्यास में कहीं जगह बाहरी संघर्ष दिखाई देता है । जैसे - रूस्तम-खाँ-प्यारी का संघर्ष, सुखराम और डाकूओं का संघर्ष आदि । इसके साथ ही साथ उपन्यास में अन्तरंग संघर्ष भी जगह - जगहों पर दिखाई देता है । अधिकतर पात्र अनपढ या अशिक्षित होने के कारण उनमें अन्तरंग संघर्ष कम मात्रा में दिखाई देता है ।

थोडे में, संघर्ष के बिना कथावस्तु रोचक एवं प्रभावशाली नहीं बनती । उसी के अनुसार उपन्यास में जगह जगह पर पात्रों के बीच संघर्ष दिखाई देता है और उससे पाठकों की जिज्ञास बढती है ।

५) कथावस्तु में आँचलिकता --

'कब तक पुकारूँ' यह आँचलिक उपन्यास है । इसमें आँचलिक उपन्यास की लगभग सभी विशेषताएँ दिखाई देती है । कथावस्तु में आँचलिकता देखते समय हम उसकी एक-एक विशेषता को लेकर अध्ययन करेंगे । आँचलिक उपन्यास की विशेषताओं का विस्तृत अध्ययन हमने द्वितीय अध्याय में किया है ।

१) कथावस्तु में सीमित भौगोलिक परिवेश का अंकन --

'कब तक पुकारूँ' उपन्यास के कथा का केन्द्र वैर गाँव है । वैर, राजस्थान और ब्रज प्रदेश के सीमा पर बसा हुआ है । यहाँ खानाबदोष जरायमपेशा नट- - करनटों ने अपने डेरे लगाएँ थे । जरायम पेशा नट ही 'कब तक पुकारूँ' की कथा के उपजीव्य रहे हैं । सन १९४८-४९ ई. के आसपास डॉ. रांगेय राघव बीमार हुएँ । उनके पाँव को बडा भारी फोडा हुआ । कई प्रकार की औषधियाँ की गई

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.४४५ ।

परन्तु कोई विशेष्ठा लाभ नहीं हुआ । अत: निराश होकर वे आगरा से वैर आए । यहाँ वे जडी-बुटी के इलाज पर उतर आएँ । उसी समय वैर की फुलवाडी में करनटों ने अपने डेरे जमाएँ थे । करनट जडी-बुटीं, शहद आदि वस्तुएँ बेचने गाँव में आते - जाते थे । लेखक ने करनट सुखराम से जडी-बूटी एवं औष्ठाधी ली । यही सुखराम उनके उपन्यास का नायक बना । उपन्यास में यही चित्रण मिलता है । उपन्यास के आरंभ में उसी प्रदेश का चित्रण मिलता है । जैसे --

" महल सुन्दर था । जाडे की शाम। डूबते सूरज की किरणें बेरों के सुगंधि जंगल पर पडकर अमलतासों और सेमल के पेडों पर फिसल रही थीं । और फिर कच्चे दगरे की गाय-भैंसों के खुरो से उठी धूल पर आरपार हो जाने का प्रयत्न कर रही थीं । चारो ओर ठंडक थी । दूर एक पेड के नीचे हनुमानजी थे, लाल सिंदूर में लगे, और एक पहलवान नंगे बदन, अखाडे की मिट्टी को मले हुएँ, दनादंन लंगोट बाँधे बैठक लगा रहा था । एकमात्र कमरख के फलहीन पेड के सामने रह मुझे बडा अजीब-सा लग रहा था । गाँव की शाम की गंदगी, परेशानी सब धीरे-धीरे उतरते अंधेरे में छिपती चली जा रही थी और चारों ओर लौटते पक्षियों का कलरव अंधेरे के पांवों के नीचे तिरता-तिरता दबा जा रहा था । मंदिरों की झालरों और घण्टो की आवाज अब ऐसे सुनाई देती थी जैसे किसीने तांता जोड दिया हो । और दूर बजती बैलों की घंटियाँ और भी एक सूनापन भर-भर देती थी । " [१]

इसीतरह उसी भू-भाग का चित्रण लेखक ने अनुठे ढंग से किया है । एक जगह लेखक ने अधूरे किले का चित्रण निम्नानुसार किया है --

" हम लोग फुलवारी के दरवाजे से घुसे । पुरानी इमारत में बसनेवाले माली सो रहे है। उनके बैल भी सो गएँ है । रास्तों के दोनों तरफ सुनसान छाया हुआ है और सफेद महल अपने सारे भूतों के किस्सों को लेकर एकान्त खडा है । नरेश उसीमें चला गया है, निर्भय, प्रशांत । मैं दूर खडा रह गया हूँ । मुझे लग रहा है,

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.८-९ ।

वहाँ कोई और भी है ।" [१]

लेखक ने इसीप्रकार विशिष्ठ भू-भाग लिया है और उसका अच्छी तरह से वर्णन किया है । इसमें लेखक ने सफलता पाई है ।

२) कथावस्तु में कौतुहल तथा आश्चर्य की भावना --

कथावस्तु में अगर कौतुहल तथा नवीन कल्पनाओं को चित्रित किया हो तो पाठक उसे लगन से पढते है । 'कब तक पुकारूँ' की कथावस्तु आरंभ से लेकर अन्त तक पाठकों को आकर्षित करती है । इसमें चंदा-नरेश की कथा, सुखराम की कथा, धूपो-चमारिन की कथा, करनटों के राजा की कथा, चंदन, मेहत्तर की कथा, साँप का जहर उतारने की कथा, डाकूओं की कथा पाठकों के दिलो की धड़कन बनती है ।

कथावस्तु में चंदन मेहत्तर की कथा पाठकों को प्रभावित करती है । जैसे --

"" अरे अब लगे न मोले बनने, इतना जंतर-मंतर जानते हो । डाकिन तुम्हारे पास आती है, बैताल तुमने सिध्द किया है ।"

"" अरे नहीं ।' चंदन हँसा । सुखराम ने कहा :' भला बताओं ।'

' दो तरीके हैं ।" चंदन ने कहा ।" [२]

यह कथा पढते समय पाठकों के मन में हलचल पैदा होती है और वह कथा को ध्यान से पढता है । आगे साँप का जहर उतारने को कथा भी रोचक है --जैसे

" और आवाज उठने लगी । वहँ आवाज ही थी, क्योंकि शक तो समझ में नहीं आते थे । सब श्रध्दा से नत हो गए थे । और गोरखो के मुख पर पूर्ण शांति थी । वह क्या कर रहा था । वह गंवार, गन्दा आदमी, जो कुछ नहीं जानता था, आज युरोप के ज्ञान को चुनौती दे रहा था । और सूसन ने हठात जो देखा तो आँखे अब आश्चर्य से फटी रह गई । क्या वह सच था ।।" [३]

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.३८ ।

२ वही पृ.४२७ ।

३ वही पृ.५१९ ।

३) कथावस्तु में जातीयता का चित्रण --

'कब तक पुकारूँ' उपन्यास में जातीयता का चित्रण जगह जगह पर हुआ है। यहाँ एक संवाद दृष्टव्य है जैसे --

'मामी ने कहा :' मगर उसने तो अभी खाना भी नहीं खाया है ? दस बज रहे है। पूस की ठंड है। मेरी तो दांती बज रही है। जन्म लिया था सूअर ने ठाकुर के घर, घूमा है तो नटनी के पीछे। मेरी तो उसने इज्जत बिगाड दी।'[१]

अधूरे किले की कथा बताते वक्त सुखराम अपने को ठाकुर वंश का मानता है। सुखराम पर ठाकुर का भूत सवार है। इसकी कहानी बताते हुए वह कहता है -

'राजा को मालूम पडा तो उसने ठकुरानी को हीरों की, मोतियों की लडों की पोशाक भेजी। ठकुरानी ने उन्हें चक्की में धरकर, पीसकर चूरा करके राजा को भेज दिया और खुद दरबान के साथ भाग निकली, पर दरबान पकडा गया और ठकुरानी मार डाली गई। दरबान ने कैद से छुटकर बच्चे को पाला। वह बच्चा बडा हुआ तो नट बना।'

'फिर ?' मैंने कहा।

'फिर ?' सुखराम हिल उठा। उसकी आवाज काँप उठी। उसने कहा : मै उसी खानदान का आखिरी ठाकुर हूँ बाबू भैया।'[२]

इसी प्रकार अन्य जगहों पर भी जातीयता का चित्रण हुआ है।

३) कथावस्तु में प्रगाढ स्थानीय रंग --

स्थानीय रंग याने किसी भूभाग का चित्रण करते वक्त वहाँ की स्थानगत, भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थिति का चित्रण किया जाता है।

'कब तक पुकारूँ' में लेखक ने हिन्दी के आदर्श रूप को प्रस्तुत किया है। स्थानीय बोली भी कहीं कहीं दिखाई देती है। स्थानीय रंगत को प्रगाढ करने

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.११।

२ वही पृ.१५।

के लिए आँचलिक उपन्यास में स्थानीय बोली का प्रयोग किया जाता है और उसका अतिशय प्रयोग आक्षेप का कारण बनता है। आलोच्य उपन्यास में लेखक इस विषय में सतर्क दिखाई देता है। कथावस्तु में स्थानीय रंग का चित्रण कहीं जगहों पर मिलता है। जैसे --

" एक ने कहा :" ऐ मटू। इत्ते लोगों ने खड़े-खड़े घेरा, मगर मजाल कि लाठी देह पै लगने दो हो। यों फिर कनी-सी बन गया बीच मैदान में देखने को लगता कि अब दो टूक हो जाएगा, पर वह लक्क मारता कि आँखे संग काढ के ले जाता मै हिरानी-सी रह गई। दैया रे दैया।..." पर के लाठी चली तो दोनों ओर के ज्वान थोई महरा-महरा के गिरे। सौगंध है, वैसी लड़ाई देख के धिन हो गई। आज तो कोई बाँके को देखता। होय कैसी-कैसी दांती मींच-मींच के सिसियाया, पै एक न चली।" [१]

सुखराम, प्यारी और कजरी को लेकर दूसरे प्रान्त में जाने की बात सोचता है --

" वहाँ तुम दोनों जने-जने की नहीं, सिरफ मेरी होगी।" [२]

" जने-जने" शब्द में स्थानीयता परिलक्षित होती है। प्यारी रुस्तम-सौ के पास पहुँचकर साबुन से नहाने लगती है और सुखराम उसको" साबन" बोलता है जो प्राय: ग्रामीण समाज में इसीतरह उच्चारित किया जाता है।

४) कथावस्तु में लेखक का समाजशास्त्रीय एवं सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टिकोण -

मनुष्य समाजशील प्राणी है। इसलिए वह समूह से रहता है। उसके आपसी सम्बन्धों से जो परस्पर व्यवहार होता है, उससे सामुदायिक रूप से समाज की मनोदशा का परिचय होता है। इसका चित्रण उपन्यासों में होता है। इसके पीछे लेखक का समाज के प्रति दृष्टिकोण रहता है।

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.१९२।

२ वही पृ.९९।

`कब तक पुकारूँ` उपन्यास में भी इसप्रकार का चित्रण हुआ है। लेखक जब देखते हैं तब सुखराम कहता है। जैसे --

`यह हमारी बस्ती है।` सुखराम ने कहा।

मैंने देखा, छोटे-छोटे घर थे। और अब सांझ उस जंगल से बस्ती को चारों ओर से घिराव डालकर दबाएँ ले रही थी। शायद ही दस घर हों। मैंने सोचा .... यह संसार कितनी तरह का है ? कहीं बम्बई की भीड है, कहीं आदमी ऐसे भी सन्नाटे में रहकर उम्र गुजार देता है ?`[१]

यहाँ लेखक की उनके प्रति आस्था दिखाई देती है। आगे का प्रसंग भी देखिए जहाँ सुखराम अपने बस्ती के लोगों का कितना खयाल रखता है। जैसे --

`बढी रामा का नाती बीमार,था। वह मुझे दिखाई दी।
मैंने पुकारा :`कैसा है अब ?`
`मोतीझारा और ऊँह दोनों का बुखार है, बचेगी नहीं।`
बुढियाँ की आँखों में आसूँ आ गएँ। उसने कहा :`रातभर आग
जलाएँ रहे, फिर भी बर्राता रहा।`[२]

इसके साथ ही साथ लेखक ने कथावस्तु में सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टिकोण को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

६) कथावस्तु में राष्ट्रीय जन-जागरण की नई दिशा--

डॉ. रांगेय राघवजी ने सामन्ती व्यवस्था को नए आलोक में देखा और उसे इस रूप में प्रस्तुत किया जिससे` करनट जाति` के प्रति जन-जीवन में आस्था प्राप्त हो सके। उन्हें मानवीय अधिकारों से युक्त बनाने का यह एक प्रयास है। यद्यपि जो है उसे बदलना तो असंभव है किन्तु उसकी आवाज जब तक बुलन्द न हो तब तक

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.१० ।
२ डॉ. रांगेय राघव - - ,, - पृ.१०० ।

परिवर्तन संभव नहीं है । इस उपन्यास में मुक तथा शोषित वर्ग को वाणी मिली है । स्वयं लेखक उपन्यास में कहते है --

" शोषण की घुटन सदा नहीं रहेगी । वह मिट जाएँगी ,सदा के लिए मिट जाएगी । सत्य सुर्य है । वह मेघों से सदैव के लिए घिरा नहीं रहेगा । मानवता पर से यह बरसात एक दिन अवश्य दूर होगी और तब नई शरद् में नए फूल खिलेंगे, नया आनंद व्याप्त होगा । " १

स्वातंत्र्योत्तर काल में हमारे देश में सम्पूर्ण जन-जीवन में सभी क्षेत्रों में परिवर्तन आया है । लोकतंत्र के कारण प्रत्येक प्रौढ व्यक्ति को मत का अधिकार प्राप्त है । और जिससे चुनाव में सफलता पाने के लिए विभिन्न जन-जातियों में प्रचार होने लगा । और यहाँ से राष्ट्रीय जन-जागरण को नई दिशा मिली है । कथावस्तु में यह दिखाई देता है ।

७) कथावस्तु में फोटोग्राफिक शैली --

हर एक लेखक की अपनी अपनी शैली होती है । उसके माध्यम से वह साहित्य सृजन करता है । जिस तरह हम तस्वीर खींचते है उसीप्रकार उपन्यासकार उसी कथा को हूबहू पाठकों के सामने रखने का प्रयास करता है । " कब तक पुकारूँ " उपन्यास में भी इस शैली का इस्तेमाल किया गया है । उपन्यास में धूपों की कथा, डाकूओं की कथा, चंदन मेहत्तर की कथा, साँप का जहर उतारने की कथा आदि कथाएँ चलचित्र की भान्ति पाठकों के मन-मस्तिष्क में हलचल पैदा करती है । चंदन मेहत्तर और सुखराम जब मरघट में जाते है तब चंदन मंत्रो का उच्चार करता है --

" जे भवानी की । टं टं टं टं टं कबीर, हत ज्ञान
बुध्दि जै, टं टं टं टं ... । " २

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.६३४ ।

२ वही पृ.४३३ ।

इस तरह जहाँ उनका जीवन स्वच्छन्द है वहाँ वे अंधविश्वासों में भी डूबे हैं। उपर का दृश्य तस्वीर के समान पाठकों के मन में बैठता है। इसतरह के अन्य उदाहरण भी उपन्यास में दिखाई देते हैं।

८) कथावस्तु में व्यक्ति-चित्रण --

`कब तक पुकारूँ` उपन्यास की कथावस्तु में व्यक्तिचित्रण को अनन्यसाधारण महत्व है। उपन्यास में सभी पात्रों का चरित्र-चित्रण अनुठे ढंग से किया है। उपन्यास में सुखराम प्रमुख पात्र के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उसका चित्रण निम्नप्रकार से जैसे --` मेरा हलाजी एक और भी आश्चर्यजनक व्यक्ति था। वह गले में मालाएँ पहनता, सिर पर साफा बांधे रहता और हाँथों में काँच के कड़े पहनता। वह इतने पुराने युग का था और मैं अपने को नितान्त आधुनिक समझता था। मै कभी इन गंवार हलाजों में भरोसा नहीं करता, पर जरूरत ही कुछ ऐसी पड गई कि मुझे झुकना पड गया।`[१]

उपर्युक्त उध्दरण से सुखराम के व्यक्तित्व के बाहरी और आन्तरिक पहलूओं पर प्रकाश डाला जा सकता है। वह खुद को ठाकुर वंश का समझाता है। उसका सारा बर्ताव उसी के अनुसार है। इसी तरह अन्य पात्रोंका व्यक्ति-चित्रण भी हूबहू लगता है। इसमें `शक` है ही नहीं।

९) कथावस्तु पर लोकसाहित्य का प्रभाव --

`लोक` यह विशेषण जन सामान्य समाज के लिए प्रयुक्त होता है। यह समाज अशिक्षित होता है और शिक्षित लोगों के प्रभावों से दूर प्रकृति के सानिध्य में जैसे गाँव, वन-प्रांत याग झोपड़ों आदि में बसा रहता है, जिन्हें असभ्य कहा गया है। परन्तु ये लोग सरल एवं नैसर्गिक जीवन व्यतीत करते है।

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.७।

इसीतरह लोक समुदाय अपनी पुरानी स्थिति अर्थात आदिम प्रवृत्ति में ही चला आ रहा है। आदिम जन-जातियाँ इसी समाज का प्रतिनिधित्व करती है। इन लोगों के लिए लिखा गया साहित्य याने लोक साहित्य है। `कब तक पुकारूँ` उपन्यास में भी राजस्थान और ब्रज प्रदेश में फैली करनट जाति का चित्रण किया है। `कब तक पुकारूँ` में करनट जाति की सांस्कृतिक झाकियाँ, रूढियाँ, अंध विश्वास, टोने-टोटके एवं विविध रीति-रिवाज अंकित किए है। भूमिका में लेखक ने बताया है कि --

` नट कई तरह के होते हैं। इनमें करनट जरायमपेशा कहे जाते है। इनकी कोई नैतिकता नहीं होती। इनमें मर्द औरत को वेश्या बनाकर उसके द्वारा धन कमाते है। ज्यादातर ये लोग चोरी करते है और ढोल मढना, हिरन की खाल बेचना इनका काम है।` [१]

थोडे में, `कब तक पुकारूँ` उपन्यास के कथावस्तु पर लोकसाहित्य का असर पडा हुआ दिखाई देता है। `कब तक पुकारूँ` उपन्यास की कथावस्तु का अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि इसमें राजस्थान और ब्रज के आसपास के प्रदेश का चित्रण किया गया है। उसमें लेखक सफल हो पाएँ है। उन्होंने सीमित भौगोलिक प्रदेश का अंकन अत्यंत समग्रता से किया है। कथावस्तु में जगह जगहों पर जिज्ञासा दिखाई देती है, जिससे पाठक उसे महसूस करते हैं कि यह एक चल चित्र की कथा ही है। इसमें नट, करनट जाति का चित्रण अत्यंत सफलता सेकिया गया है। और इसमें एक विशिष्ट भू-भाग का चित्रण होने के कारण कथावस्तु को प्रगाढ स्थानीय रंग आया है। लेखक का दृष्टिकोण यह है कि इसमें उपेक्षित लोगों का चित्रण हो जाए। इसलिए उन्होंने उनकी समस्याओं को पेश करने का प्रयास किया है। यहाँ लेखक का समाजशास्त्रीय एवं सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टिकोण दिखाई देता है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक रांगेय राघव जी ने राष्ट्रीय जन-जागरण की नई दिशा पाठकों के सामने रख दी है। इस उपन्यास में लेखक ने वर्णनात्मक

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.३ - भूमिका से उधृत।

शैली में पात्रों का चित्रण किया है। यहाँ फोटोग्राफिक शैली का इस्तेमाल किया गया है। इस उपन्यास की कथावस्तु आँचलिक है इसमें शक है ही नहीं।

(२) पात्र और चरित्र-चित्रण --

उपन्यास के मुख्य तत्वों में कथावस्तु के पश्चात चरित्र-चित्रण को सबसे अधिक महत्व मिला है। उपन्यास में जो कथावस्तु प्रस्तुत की जाती है, उसको आगे लेकर चलनेवाला ही पात्र कहलाता है। पात्र के माध्यम से उपन्यासकार इस जीवन के विविध रूपों को प्रस्तुत करता है। इसलिए इस तत्व का महत्व उपन्यास में अपेक्षित दृष्टि से अधिक हो जाता है।

उपन्यासकार समाज का सजग प्राणी होता है। इसलिए वह उपन्यास में जिसप्रकार के पात्रों की आयोजना करता है उनसे उनकी चारित्रिक समानता की संभावनाएँ बढ जाती हैं। उपन्यासकार के व्यक्तित्व की छाया कहीं न कहीं पात्रों पर अवश्य पडती है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि उपन्यासकार सर्वत्र अपना ही चित्रण करता है किन्तु उसका दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक होता है।

१) चरित्र-चित्रण की विभिन्न प्रणालियाँ --

उपन्यास में विभिन्न पात्रों का चरित्र-चित्रण करने के लिए उपन्यासकार को भिन्न-भिन्न प्रणालियों का आधार लेना पडता है। स्थूल रूप से ये प्रणालियाँ या तो बहिरंग के अन्तर्गत रखी जा सकती हैं या अन्तरंग के। लेकिन आधुनिक युग के उपन्यास साहित्य के स्वरूप के अनुसार इन दोनों के भी अनेक सुक्ष्म भेद हो गए हैं। इसलिए यहाँ पर आधुनिक उपन्यास के क्षेत्र में प्रचलित प्रमुख प्रणालियों की संक्षिप्त परिचयात्मक व्याख्या की जा रही है।

(क) बहिरंग प्रणाली --

किसी पात्र का परिचय उसके व्यवहारों से जाना जाता है। इन व्यवहारों को जानने के लिए निम्नलिखित प्रणालियों का उपयोग किया जा सकता है --

(अ) पात्रों के नामकरण द्वारा चरित्र-चित्रण --

उपन्यास में प्रत्येक पात्र का कोई न कोई नाम अवश्य होता है और यह नाम सार्थक होता है। `कब तक पुकारूँ` उपन्यास में `प्यारी` यह नाम चरित्र-चित्रण की दृष्टि से सार्थक है।

(ब) परिचयात्मक टीका - टिप्पणी--

इस प्रणाली के द्वारा उपन्यासकार पात्रों की आकृति, प्रकृति, वेशभूषा गुण एवं दोषों के सम्बन्ध में टिप्पणी लिख देता है। इससे पात्रों का एक औपचारिक परिचय हो जाता है। इस प्रणाली का इस्तेमाल प्राय: सभी उपन्यासों में दिखाई देता है।

(स) स्थिति विशेषा में क्रिया-प्रतिक्रिया का चित्रण --

विशिष्ट स्थिति में ही पात्रों की क्रिया-प्रतिक्रिया होती है। इसी वक्त लेखक बड़ी सावधानी से इस स्थिति का चित्रण करता है।

(द) अनुभाव चित्रण --

प्रतिक्रियात्मक स्थिति में पड़ जाने पर पात्र के मुख तथा अन्य अंग-प्रत्यंग में जो परिवर्तन होते हैं, उनको दिखाने के लिए उपन्यासकार पात्रों के अनुभावों का चित्रण करता है।

`कब तक पुकारूँ` उपन्यास में पात्रों का बहिरंग चित्रण अनूठे ढंग से हुआ है। उपन्यास में सुखराम प्रमुख पात्र है। उसकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नप्रकार से --

`पर मुझे उसमें जवानी की हलकम्प ही नहीं दिखाई देती। वह शराब पीता है तो पीने में हिचक जाता है। किसी की लड़की के साथ एक दिन नहीं पाया गया। कौन-सा जवान है जो यह नहीं करता। यह गाली भी नहीं देता, जो मरदानगी की निशानी है, चोरी वह नहीं जानता, जुआ वह नहीं खेलता।`[१]

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.२८।

इसके के बाद प्यारी भी एक ऐसा पात्र है जो उपन्यास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब वह सिपाही रूस्तम-खाँ की रखैल बनती है। वहाँ का एक प्रसंग दृष्टव्य है -- जैसे --

` रूस्तम-खाँ कराहता है।
प्यारी कहती है :` फिर क्या हुआ ?`
` बड़ा दरद है।`
` मेरे भी तो है।`
` पानी।`
` प्यास लग रही है ?`
` हाँ प्यारी।` १

यहाँ प्यारी रूस्तम-खाँ की रखैल होकर भी वह उसका कितना खयाल करती है। मनोभाव से वह उसकी सेवा करती है। प्यारी की मौत का प्रसंग भी कितना हृदयद्राक है --

`` प्यारी मर गई है।`
नहीं।`
` वह सामने कौन है।`
` प्यारी है।
` वह आग के बीच में है।`
` नहीं राजाजी। तुम झूठ कहते हो।`
` वह मर गई है सुखराम।`
` अच्छा।`
` तुझे विश्वास नहीं ?`
` नहीं`
` क्यों ?`

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ ` - पृ.१५३।

" वह मुझे छोड़कर कैसे जा सकती है।"[१]

इसतरह उपन्यास में अन्य भी बहुत सारे पात्र है जिनका बहिरंग प्रणाली से चित्रण हुआ है। और इसमें प्रधान रूप से सुखराम, प्यारी और कजरी का बहिरंग चित्रण अनूठे ढंग से हुआ है। सुखराम की वेशभूषा के बारे में निम्नलिखित उध्दरण दृष्ठव्य है --

" मेरा इलाजी एक और भी आश्चर्यजनक व्यक्ति था। वह गले में मालाएँ पहनता, सिर पर साफा बाँधे रहता और हाथों में काँच के कड़े पहनता।"[२]

सुखराम के बाहरी व्यक्तित्व के सम्बन्ध में भी निम्नलिखित उध्दरण महत्वपूर्ण है --

" सो कैसे ?" मैंने पुछा। और आज पहली बार मैंने उसके मुख की ओर देखा साफ, मुछों और गाँव की धूलि ने उसको ढंक लिया था। उसका रंग तांबे की तरह तपा हुआ था। आँखोंमें एक चमक थी।"[३]

सुखराम की वेशभूषा का यथार्थ चित्रण निम्नप्रकार से है --

" उन दिनों मैं जवान था। मेरे बालों में तेल पड़ा रहता और मेरा कुर्ता महीम काले रंग का होता। मै मुछों में ताव देता और धोती को दूलांगी बाँधता।"[४]

प्यारी की वेशभूषा के बारे में निम्नांकित पंक्तियाँ दृष्टव्य है --

" प्यारी घाघरा पहने थी। वह गन्दा था। उसकी चोली भी फटी हुई थी। ओढनी में थेगलियाँ लग रही थी। घूँघट काढे थी।"[५]

इस प्रकार उपन्यास में जगह जगहों पर कजरी, चंदा, नरेश, सिपाही रुस्तम-सैा बाके, धूपो चमारिन, इसीला नट और उसकी पत्नी सोंनों आदि पात्रों का बहिरंग

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - ४१४।
२ वही पृ.७।
३ वही पृ.८।
४ वही पृ.५७।
५ वही पृ.६६।

चित्रण हुआ है। जो उचित लगता है।

(स) अन्तरंग प्रणाली --

पात्रों के व्यक्त व्यवहारों से परिचित हो जाने पर भीउनके आंतरिक भावों को समझाना आवश्यक होता है।क्योंकि पात्र का आन्तरिक पक्ष बाह्य से अधिक महत्वपूर्ण होता है। मनोवैज्ञानिक मानव के चरित्र के अन्तर्गत उसके आन्तरिक गुणों पर ही विचार करते हैं। आंतरिक गुणों को जानने के लिए निम्नलिखित विधियों को अपनाया जाता है।

(अ) मनोविश्लेषाण प्रणाली --

मनुष्य के चेतन और अवचेतन तथा उनसे उद्भूत समस्याओं को इस प्रणाली द्वारा व्यक्त किया जाता है। हिन्दी में जैनेन्द्र और इलाचन्द्र जोशी ने इस प्रणाली का अधिक प्रयोग किया है।

(ब) सम्मोह विश्लेषाण --

इस प्रणाली के द्वारा सम्मोहक पात्र को सम्मोहनिद्रा की अवस्था में ले जाता है और धीरे-धीरे उससे प्रश्न करता हुआ उसके गतजीवन की घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर लेता है।

(क) पूर्व वृत्तात्मक प्रणाली --

इसमें अतीत की अनुभूतियों के माध्यम से वर्तमान मानसिक अवस्था का ज्ञान होता है। इस प्रकार अन्य प्रणालियोंद्वारा पात्रों का चरित्र-चित्रण किया जाता है।

` कब तक पुकारूँ ` उपन्यास में सुखराम लेखक को जड़ी-बुटी देकर अपनी कथा बताता है और लेखक उसे उपन्यास रूप में लिखता है। नरेश की आन्तरिक अवस्था का चित्रण निम्नप्रकार से --

` नरेश के कोमल मुख पर एक नया अवसाद घिर आया, जिसमें जीवन के नए विश्वासों का अम्बार लगा था, मानों वे जो फसलों में झूमती हुई हरी-हरी

बाले थी, कट-कटकर कनक बनकर ढेर ढेर वसुधंरा पर मनुष्य के कल्याण स्वप्न का प्रतीक बनकर सामने निखार लेकर उपस्थित हो गई थीं । मेरी अंतरात्मा उस भीगे खेत-सी विभोर हो उठी । यह आयु कितनी मादक, कितनी वितृष्ण होती है, जब सारी दुनिया इसलिए फैली हुई पड़ी रहती है कि उसपर अपने ही चरणों के वैभव से चलना है । " [१]

यहाँ सुखराम की मानसिक स्थिति का चित्रण निम्नप्रकार से किया है । जैसे..
" मैं सोचने लगा - क्यों मैं इतना अजीब हूँ ? क्यों मैं उनका-सा नहीं हूँ, जिनके बीच में रहता हूँ ? मैं क्यों नहीं नाचता, मैं क्यों नहीं गाता ? सोलह साल की उम्र तक मैं क्यों भूला रहा हूँ ? मेरी गोद में मेरी प्यारी सो रही है। वह मेरी बहू है । क्यों वह कंजरों में जाती है ? मैं इसे छुरियों से गोदकर फेंक दूँगा, सुसरी अगर मुझे छोड़कर कहीं गई तो । कुतियाँ। " [२]

इस तरह पात्रों का ~~अन्तरंग प्रणाली के रूप में~~ चित्रण हुआ है । उपन्यास में अन्य पात्रों का भी अन्तरंग चित्रण हुआ है ।

२) <u>चरित्र-चित्रण में शैली तत्व</u> --

हर एक की शैली अलग होती है । उसी के अनुसार उपन्यासों में चित्रण किया जाता है। ' कब तक पुकारूँ ' उपन्यास में पात्रों का चरित्र-चित्रण अधिकतर वर्णनात्मक शैली में किया है । साथ ही साथ कहीं कहीं उपन्यास में मिश्रित शैली का भी प्रयोग किया है । कहीं अंशिक रूप में पत्रात्मक शैली में चरित्र-चित्रण किया गया है । जैसे उपन्यास के अन्त में बूढ़ा अंग्रेज (सैंयर) सुखराम को खत लिखता है और चंदा केबारे में सच्चाई बता देता है । यहाँ उसके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है ।

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कबतक पुकारूँ - पृ.१३ ।
२ वही पृ.३२ ।

३) पात्रों में आँचलिकता --

रांगेय राघव के `कब तक पुकारूँ` उपन्यास के सभी पात्र आँचलिक है। हर पात्र की अपनी अलग अलग विशेषताएँ, अलग अलग रहन सहन है। आदि सभी विशेषताओं को देखने के पश्चात्य यह महसूस होता है कि रांगेय राघव जी ने प्रस्तुत उपन्यास में जिन पात्रों का चुनाव किया है उनमें आँचलिकता दिखाई देती है। उपन्यास में प्रधान पात्रों के रूप में सुखराम, प्यारी और कजरी का चरित्र-चित्रण हुआ है और गौण पात्रों के रूप में रुस्तम-खाँ, बाँके, नरेश, चंदा, धूपो, सूसन, लारेन्स आदि का चित्रण हुआ है। इनके साथ सबेरा, राजाराम, पीतो, बुध्दा, पैंगा, राधू, निरोती बामन, पंगा की बहू, सबेरा की पत्नी, इसीला नट और उसकी पत्नी सौनो आदि बहुत सारे पात्र उपन्यास में दिखाई देते है।

`कब तक पुकारूँ` उपन्यास का नायक सुखराम है, इसके बारे में दो मत नहीं है। राजस्थान और ब्रज प्रदेश में फैली नट जाति में सुखराम का जन्म होता है। सुखराम के माँ-बाप की मृत्यु उसके बचपन में हुई थी। इसीला नट और उसकी पत्नी सौनो ने बड़े लाड-प्यार से उसकी परवरिश की थी और जवान होने पर अपनी बेटी प्यारी से सुखराम का विवाह किया था।

उपन्यास के प्रारंभ में लेखक जब सुखराम से जड़ी-बुटी लेता है तब उसकी वेशभूषा का चित्रण निम्नप्रकार से हुआ है -- जैसे

`अब मेरे कान जरा खड़े हुए।

`सो कैसे ?` मैंने पुछा। और आज पहली बार मैंने उसके मुख की ओर देखा। साफे, मूछों और गाँव की धूलि ने उसको ढंक लिया था। उसका रंग तांबे की तरह तपा हुआ था। आँखों में एक चमक थी। अब वह लगभग चालीस बरस का हो गया था। उसकी सीधी लम्बी नाक बड़ी सुंदर थी। वह एक घुटने तक की धोती और लम्बा-सा खुले गले का कोट पहने था। और मैंने कल्पना की किसी दिन यह सुखराम नट चौड़ी हड्डियों का गबरू जवान रहा होगा। उसकी आँखे

बहुत सुन्दर रही होगी, जिनके दोनों ओर अब गोल लकीरें खिंच गई थी ।" १

नटों के पेशे के सम्बन्ध में सुखराम का निम्न उध्दरण महत्वपूर्ण हो सकता है । -- जैसे --

" मीकम नट के पास जैसे खेत-क्यार है, मै भी वैसे ही जायदाद रखूँगा । मेरी प्यारी को सूप नहीं बनाने होंगे , घर बैठ खाएँगी ।" २

इसके बाद उनका खान-पान आदि के सम्बन्ध में भी चित्रण उपन्यास में जगह जगह पर मिलता है । - जैसे --

" प्यारी लजाई-सी उठकर चली गई थी । मै भी उठा । जब मै हाँथ-मुँह धोकर आकर खाट पर बैठा तो माथा ढंककर प्यारी रोटी ले आयी । चुपडी हुई । उनपर लाल मिरच की चटनी थी । मैंने खाई तो आज मुझे ने बडी स्वाद की लगी ।" ३

एक जगह सुखराम खुद अपनी वेशभूषा के बारे में जानकारी देता है । जैसे --

" उन दिनों मै जवान था । मेरे बालों में तेल पडा रहता और मेरा कुर्ता महीम काले रंग का होता । मै मुछों में ताव देता और धोती को दुलांगी बाँधता । कमर में कटार खोंसे रखता । मेरे एक हाँथ में कडा पडा था ,पतला लोहे का। गले में मै दो-तीन तावीज पहनता । मै ताकद-मरा था ।" ४

उन लोगों में शायद मुँछ बढाने की परम्परा थी । वे हमेशा जंगल में घूमते है इसलिए हिस्त्र पशुओं से बचने के लिए वे अपने कमर में कटार बाँधते होंगे । उनके यहाँ अंधविश्वास रूढि होने के कारण उन्होंने गले में तावीज पहने थे । इस तरह उसका रूप है ।

---

१ हाँ.रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.८ ।

२ वही पृ.३३ ।

३ वही पृ.३३ ।

४ वही पृ.५७ ।

इनके पेशे के सम्बन्ध में निम्नलिखित उध्दरण महत्वपूर्ण है। जैसे --

`` क्यों ?` कजरी ने कहा :` बैठे-बैठे आ जाएगा ?`

` और नट कहाँ से लाते है ?`

` चोरी करते है। नटिनी कमाती है।`

` सुखराम क्षण-भर सोचता रहा।`` १

इसके साथ-ही-साथ जडी-बुटी बेचना यह इनका पेशा है। उपन्यास का निम्न उदाहरण दृष्टव्य है। जैसे --

`` तूने जडी नहीं ली ?`

` कल ले लूँगा` सुखराम ने कहा।

` यही सोचती थी। उसे बता दीजो। वरना कल के बाद फिर कौन इलाज करेगा उसका।`

` दवा बनाके दे दूँगा। ऐसे बहुत बता दो।` सुखराम ने कहा :-

` गुरू का हुकुम है, बता नहीं सकता।`` २

संक्षेप में उपन्यास में सुखराम यह प्रधान पात्र है। आँचलिकता की दृष्टि से लगभग सभी विशेषाताएँ सुखराम के चरित्र- में आयी है।

स्त्री जीवन

` कब तक पुकारूँ` उपन्यास में प्यारी सुखराम की पत्नी और प्रिया भी है। सिपाही रूस्तम-खाँ उसे जबरदस्ती से भगाकर ले जाता है और अपनी रखैल बनाता है। फिर भी सुखराम के प्रति प्यारी का प्रेम, निष्ठा एवं श्रध्दा कम नहीं होती। प्यारी रूस्तम-खाँ के घर रखैल बनकर रहती है। वहाँ वह कितनी विवश, कितनी दु:खी है। दुनियाँ से निराश होकर एक स्थल पर कहती है --

यह संसार ऐसा क्यों बनाया है जहाँ आदमी कहता है तो उसके लिए दर्द तक नहीं होता ?`` ३

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ. ४२२।

२ वही पृ. ४६६।

३ वही पृ. ३७८।

प्यारी के इन शब्दों से उसकी बेबसी प्रकट होती है और नट जाति की नारियों के दु:खपूर्ण जीवन का परिचय मिलता है। प्यारी का वर्णन लेखक ने अत्यंत मार्मिक ढंग से किया है -" प्यारी के नेत्रों में अमय है। वह संगमरमर की तरह खड़ी है। यदि वह अब सुन्दर न रहे और करूण हो जाए,तो भी वह बुरी नहीं लगेगी। वह जंगली औरत यदि अब सुसंस्कृत होकर अपने भावों को छिपाने योग्य भी हो जाएँ तो भी इस बूंद की अपराजित,अशोषम,अजडित,अक्षय तरलता को निनष्ट नहीं कर सकेगी। वह प्यार की आँख है।" [१]

प्यारी रुस्तम-खाँ की रखैल होना इसलिए पसन्द करती है कि अपने प्रेमी सुखराम को पुलिस से किसी भी प्रकार की तकलीफ न हो। कितना बड़ा त्याग और उदारता है उसके चरित्र में। कितना बड़ा समझौता किया है प्यारी ने अपने जीवन में। सुखराम को प्यारी से कभी भी शारीरिक सुख नहीं मिलता था। इसकी वजह उसने एक स्थल पर बताई है, --" जब मैं उसके (प्यारी) के पास जाता था तो वह कहती थी," अभी नहीं"। मैं अभी थकी हूँ। अभी तो बोहरे का बेटा गया है।"[२] ये लाचार करनटियाँ अपनी पेट की आग मिटाने के लिए और उच्च वर्ग के लोगों की देह की आग बुझाने के लिए अपने आपको बेचती है।

रांगेय राघव जी ने सामन्ती शोषण चक्रों में पिसती हुई नारी की दयनीयता,बेबसी को चित्रित किया है। उनके उपन्यास में चित्रित नारी शोषित, उत्पीडित ,त्रस्त,अत्याचारों का शिकार है। उपन्यास में अन्य कहीं जगह प्यारी के जीवन के सम्बन्ध में चित्रण आया है। जैसे - उसका रहन-सहन, खान-पान,वेशभूषा आदि का आँचलिकता की दृष्टि से चित्रण उपन्यास में दिखाई देता है।

कजरी,सुखराम की दूसरी पत्नी है। प्यारी रुस्तम-खाँ के घर जाने के बाद कजरी सुखराम की घरवाली बनती है। प्रारंभ में कजरी को मर्दों को फँसाकर

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.९६।

२ वही पृ.१५०।

धन कमाने में रुचि थी । लेकिन सुखराम के घर आने के बाद वह धीरे-धीरे बदल जाती है । कजरी और सुखराम दोनों मिलकर अधूरे किले का सफर करते हैं । कजरी का सुखराम का वीरतापूर्वक साथ करना, घायल सुखराम की सेवा करना आदि घटनाएँ उसके चरित्र के विभिन्न पहलूओं को स्पष्ट करती हैं ।

कजरी अपनी जाति के अन्य स्त्रियों के समान शराब और बीडी पिती है --

' कुछ देर बाद सुखराम ने कहा -' लो, बीडी, पी लो ।'
तीनों ने बीडी पी । फिर सुखराम ने कहा -' अब चलो ।'
कजरी ने कहा ' चल'
तीनों उठ खडे हुएँ । '[१]

कजरी जितनी सहनशील, शांत स्वभाव की है उतनी जल्दी ही उसे गुस्सा आता है । एक जगह वह सुखराम से उल्टी-सीधी बाते करती है । जैसे --

' हजार मानूँगी, तेरी लुगाई बना है, अपनी मर्जी से । तू कहे तो भूखी रहूँ, प्यासी रहूँ । तू सोता रह, मैं तेरे पाँव दबाऊँ । तू कहे कांटों पर चले लू, जलती आग मे हाथ दे दू । पर तू मेरे लिए यह सब नहीं कहता । तू कहता है मैं तुझे प्यार करूँ और तू अपना दिल कहीं और लगा दे । तू कहे कि मैं सौत को भी प्यार करूँ, सो मुझसे नहीं होगा । '[२]

उपन्यास में प्यारी और कजरी के बाद नारी पात्रों में चंदा का चरित्र अत्यंत मनोहर एवं प्रभावशाली बन पड़ा है । प्रारंभ में ही चंदा का चित्रण हुआ है । जैसे -

' कौन ?' सुखराम ने कहा : । चंदा । अभी घर नहीं गई ?'
' रोटी बनाकर घर आयी हूँ दादा (पिता), पानी का एक डोल लेने आयी थी । मुझे अब मालूम हुआ कि वह सुखराम की बेटी है । '[३]

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.३५५ ।
२ वही पृ.९८ ।
३ वही पृ.१० ।

चंदा सुखराम की मानस कन्या है। फिर भी वह उसे सगी बेटी से भी जादा प्यार करता है। जैसे -" चंदा ने सुखराम के वक्ष में मुँह छिपा लिया। वह उसके सिर पर हाँथ फेरने लगा। मुझे ऐसा लगा जैसे आश्रमवासी कण्व ने शाकन्तुला के सिर पर हाँथ फेर दिया हो।" [१]

उपन्यास में चंदा का चरित्र लेखक रांगेय राघवजी ने कम शब्दों में किया है।

उपन्यास के मुख्य पात्रों में सुखराम के बाद नरेश का स्थान महत्वपूर्ण है। लेखक ने नरेश के बारे में लिखा है --" वह पंद्रह साल का छोटा-सा लड़का वहाँ निश्चल और पूर्व धैर्य के साथ खड़ा है। वह नि:शस्त्र और एकाकी है। सामने जीवन का अंध:कार है। वह एक पतला दुबला लड़का है। वह बहुत लंबा नहीं है, बल्कि पपीते के नए पेड़-सा कोमल है। उसका रंग गेहुआ है, जिसमें अभी एक ताजगी है, जैसे कोई छापकर निकलने वाली साफ किताब, जिसपर मुंगतियों के धब्बे नहीं पड़े होते। उसकी आँखे मासूम और डबडबाई है, जैसे घायल हिरनी की हृदय को हिला देनेवाली आँखे, जिनकी बरौनियों में फरियादें पर्तकी पर्त जमकर काली पुतलियाँ बनती है, और जिंदगी अपनी सारी मायुसी लेकर टिमटिमाती हुई तारा बनकर चमका करती है।" [२]

उपन्यास में उच्च वर्ग के पात्रों का संक्षेप में चित्रण हुआ है। लेखक उनके चरित्र की एक झाँकी मात्र प्रस्तुत करता है। नरेश के पिता, दारोगा, रूस्तम-खाँ, बाँके, लारेंस, मिसी बाबा के पिता ये सब उच्च वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्र है लेकिन उनके जीवन में प्रेम नहीं, प्रकृति का आनंद भी नहीं। ये केवल विकृति में मस्त रहनेवाले जीव है। यहाँ लेखक ने आँचलिकता की दृष्टि से हर एक पात्र का चरित्र-चित्रण किया है।

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ. ४९८।

२ वही पृ. ३७।

संक्षेप में ' कब तक पुकारूँ ' उपन्यास के सभी पात्र आँचलिक है। पात्रों की वेशभूषा, रहन-सहन, खान-पान, तीज-त्यौहार, अंध:विश्वास, वातावरण चित्रण आदि का चित्रण आँचलिकता की दृष्टि से किया है। देश, काल और वातावरण के अनुसार उनका चित्रण करने का प्रयास लेखक रांगेय राघव जी ने किया है। इसका चित्रण इतना अनूठे ढंग से किया है कि उपन्यास पढने के बाद भी सुखराम, प्यारी, कजरी, चन्दा नरेश आदि पात्र हमारे मन-मस्तिष्क में चल चित्र की भाँन्ति घूमते है।

३) कथोपकथन --

पात्रों के पारस्पारिक वार्तालाप को कथोपकथन अथवा संवाद कहते हैं। हिन्दी के आरंभिक उपन्यासों में ऐसा कोई प्रयास नहीं दिखाई देता कि पात्रों का संवाद वैसा ही है, जैसा कि दैनिक जीवन में पाया जाता है। अधिक मात्रा में वहाँ स्वाभाविकता के स्थानपर कृतरिमता ही मिलती है। कालान्तर में यह परिवर्तन हुआ कि उपन्यास में कथोपकथन पात्रानुकूल हो। आज के युग में कथोपकथन का स्वरूप अधिक विकसित हो रहा है। कथोपकथन के द्वारा विचारों को सजीवता दी जाती है।

२) कथोपकथन का उद्देश्य --

उपन्यास में कथोपकथन को आवश्यक तत्व माना जाता है। पात्रों के व्यक्तित्व के उद्घाटन और कथा-क्रम के विकास के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। उपन्यास चाहे जिस किसी भी ढंग का क्यों न हो, कथोपकथन की श्रेष्ठता ही उसकी श्रेष्ठता का कारण होती है। उपन्यास में कथोपकथन की योजना प्राय: निम्नलिखित उद्देश्यों से होती है --

अ) कथानक को गति प्रदान करना,

ब) पात्रों के चरित्र का विश्लेषाण करना,

क) उपन्यासकार के उद्देश्य को स्पष्ट करना,

ड) कथोपकथन के माध्यम से वातावरण सृष्टि करना।

उपन्यासकार अपने उपन्यासों में उपर्युक्त सभी उद्देश्यों की पूर्ति के कथोपकथन का प्रयोग करता है ।

३) `कब तक पुकारूँ` उपन्यास के कथोपकथन में आँचलिकता --

`कब तक पुकारूँ` उपन्यास में कथोपकथन अनूठे ढंग से हुआ है । उपन्यास में पात्र जब वार्तालाप करते हैं तब `जनभाषा का प्रयोग हुआ है, जो अत्यंत स्वाभाविक है । उपन्यास में सुखराम और बाँके के आदमी में संघर्ष चल रहा था तब एक मालिन चिल्लाती है । जैसे --

`अरे वा । क्या मरद है । बलिहारी जाउं । नैन-पिर्च उतारूँ । हाय हाय,कैसा मरद है । दईमारे पांचो के ठट्ठ फाड के पापडे बेल दिए ।`

बाँके चिल्लाया :`जाने न पाए । घेर लो ।` एक गिरे हुएँ का लट्ठ उसने उठा लिया और गरजने लगा`खबरदार जो चला गया ।` [१]

प्यारी जब रूस्तम-सा की रखैल बनती है । तब वह कजरी को देखना चाहती है । उनका कथोपकथन कितना संक्षिप्त और सारगर्भित है । देखिए --

`` कहाँ ?` उसने पुछा ।

` मेरे साथ ।`

` पर कहाँ ?`

` प्यारी के पास`

` क्यों ?`

` वह तुझे देखना चाहती है ।`

` क्यों `` ? [२]

करनटों में औरते अनैतिक सम्बन्ध जोडकर धन कमाती है । एक जगह सोनों कहती है --

---

१ डॉ.रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.१७३ ।

२ वही पृ.९६-९७ ।

` जानती है, सिपाही क्यों आया था ?`

` जानती हूँ।` प्यारी ने कहा:` दरोगा मुझे दिन में घूर रहा था। मेरे की तबियत आ गई है। पर सुखराम तो न मानेगा।`` नहीं मानेगा ? अरी ये तो औरत के काम है। उसे बताने की जरूरत ही क्या है।` [१]

इन लोगों में अंध:श्रध्दाएँ ,पहले से ही भर गई है। ये लोग जंतर-मंतर जानते है। चंदन और सुखराम का वार्तालाप निम्नप्रकार से दृष्टव्य है --

` अरे अब लगे न मोले बनने,इतना जंतर-मंतर जानते हो। डाकिन तुम्हारे पास आती है, बैताल तुमने सिध्द किया है।`` अरे नहीं।` ` चंदन हँसा। सुखराम ने कहा:` मला बताओं।`` दो तरीके है।` चंदन ने कहा।` [२]

इनकी वेशभूषा भी सबसे अलग है। सुखराम और कजरी दुकान पर कपडे लेते है। जैसे --

` मैंने कजरी के लिए कपडे की दुकान पर कहा :` बोहरे। फरिया दिखाओ।

` लेओ। आओ।` बनिये ने कहा।

` उसने हरा,पीला और काला रंग सामने रखा।

` कौन-सा लेगी ?`

` मै क्या जानूँ।`

` बनिये ने कहा:` पीला दे दे।`

` छींट का लहंगा लिया रेशम की चोली।` [३]

उपन्यास में करनटों के राजा की और सुखराम की मुलाकात जब होती है। तब वे दोनों शराब पीते है। जैसे --

`` और लाओ थोडी।` सुखरामने कहा।

एक नटने प्याला दिया। सुखराम पीकर चिल्लाया,` राजा ?`

` हा वजीर।`

---

१ डॉ.रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.४५।
२ वही पृ.४२७।
३ वही पृ.१२२।

'मजा आ गया ।'[१]

इनके यहाँ शराब लेना, औरतों के साथ अनैतिक सम्बन्ध स्थापित करना बुरा नहीं माना जाता । इनके पेशे के सम्बन्ध में निम्नांकित कथोपकथन दृष्टव्य है । जैसे --

'बस खेल करते हैं इधर-उधर, शिकार मार लेते हैं । शहद बेचते हैं, औरतें खेल करती हैं ।' पर जाने क्यों वह नहीं कह सकी कि औरतें पेशा करती हैं और फिर इसीसे मर्द उनकी इज्जत करते हैं । जितनी जवान होगी उतनी ही उसकी कदर भी होगी ।'[२]

उपन्यास में एक जगह कथोपकथन के माध्यम से वातावरण निर्मिती हो गई है । जैसे --

'हम बायें मुड़े । एक बड़ी कोठरी थी ।
घुसने ही लगा, किसीने नाक के सामने बन्दुक उठा दी ।
मैं पीछे हट गया । मैंने कजरी को हटा दिया ।
मसाल झुकाई । देखा एक ऊँची टिकटी पर बन्दूक धरी है ।
हम कमरे में घुसे । लगा, चारों तरफ आदमी खड़े थे ।
कजरी चिल्ला उठी, 'अरी दैया ।'

उसकी आवाज गूंज उठी और लगा कि सारा किला हुंकार उठा - अरी दैया । अरी दैया ।।'[३]

यहाँ सुखराम और कजरी अधूरे किले का सफर करते हैं । वहाँ का यथार्थ चित्रण इस कथोपकथन से अत्यंत प्रभावकारी बन पड़ा है । प्यारी जबान की

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.३९९ ।
२ वही पृ.५२६ ।
३ वही पृ.१२७ ।

इतनी तेज है कि वह रूस्तम-सौ के साथ प्रतिवाद करती है। जैसे --

`रूस्तम-सौ चौका।` बोला : तुने उसे सौत कहा था ?`

`हैं तो कहूँगी नहीं ?`

`तू उसकी बीबी है कि मेरी ?`

`ब्याहता उसकी, रखैल तेरी।`

`शर्म नहींआती तुझे ?`` १

उपन्यास में घूपों पर जब बाँके द्वारा बलात्कार होता है। तब वह पागल की तरह बडबडाती है। उसका करूण क्रंदन हृदयद्राक है। उसमें उसकी दयनीयता का चित्रण हुआ है। जैसे --

`` तो मैं सती ही होऊँगी, धूपों ने कहा :` मेरी यही प्रासचित्त है। मेरे पुरबिले जन्म के पाप का मुझे दण्ड दिया उसने तो मैं उसका दण्ड उताहूंगी।`

`नही।` बूढा फिर बोला :` तू भली सही, पर धर्म की बात और है।

`सो कैसे ?` एक तरूण ने पुछा।

`बेटा, लुगाई है, इसे दोस तो लग ही गया।` २

इसमें प्रासचित, पुरबिले, दोस आदि स्थानीय शब्दों का प्रयोग करके लेखक ने वहाँ के आँचलिक माछा का चित्रण सशक्त माध्यम से किया है और इन लोगों पर लगाएँ गएँ दोछा, दण्ड आदि का चित्रण अनूठे ढंग से किया है।

उपन्यास में सुखराम यह प्रधान पात्र है। वह रूढि, परम्परा, अंधश्रध्दायों से ग्रस्त है। सूसन उसे इसके सम्बन्ध में विभिन्न सवाल पुछती है। जैसे --

`` सुखराम। अचानक उसने कहा।

`हा सरकार।`

`उसने कहा:` मरकर फिर जन्म होता है ? हिन्दू ऐसा कहते है।

`हाँ हुजुर।` वह चकराया।

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.२८८।

२ वही पृ.३०८।

`तुमने देखा ?` वह आँखे बंद` किए ही बोल रही थी ।

` नहीं सरकार, सुना जरूर है ।`

` तुम मानते हो ?`

` सब मानते है हुजूर ।`

` ठकुरानी का फिर जनम हुआ है ?`` [१]

` कब तक पुकारूँ` के अन्त में अंग्रेज (सॉयर) का चित्रण हुआ है । उसकी भाषा निम्नप्रकार से आँचलिक है । जैसे --

` जमीन किसका है ?`

` हुजूर सरकारी है ।`

` हम देखेगा । और कुछ कहना मागटा है ?`

` लोगों ने कहा` सरकार, पुलिस बहुत जुलम करती है ।`

राजा का पुलिस ?` साहब ने कहा ।` [२]

इसकी भाषा पर अंग्रेजी का प्रभाव दिखाई देता है । आँचलिक कथोपकथन का यह एक अच्छा उदाहरण है । उपन्यास के अन्त में अंग्रेज अफ्सर सॉयर का चरित्र-चित्रण कथोपकथन के माध्यम से अनूठे ढंग से किया है । उसका अपने देश के प्रति गहरा प्रेम दिखाई देता है । अन्य सभी दृष्टि से भी सूसन, कजरी का चित्रण प्रभावी हुआ है ।

संक्षेप में` कब तक पुकारूँ` उपन्यास में कथोपकथन आँचलिकता की दृष्टि से अत्यंत प्रभावी हुआ है । इसमें नट जाति की रहन-सहन, खान-पान, बोली-बानी आदि का चित्रण कथोपकथन के माध्यम के अनूठे ढंग से किया है । इसमें कथानक को गति देनें के दृष्टि से भी कथोपकथन उचित है । साथ-ही-साथ पात्रों के चरित्र का विश्लेषण करनें की दृष्टि से भी यह सार्थक उपन्यास बन पड़ा है । कथोपकथन

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.५१० ।

२ वही पृ.५३६ ।

के माध्यम से उपन्यास में वातावरण सृष्टि करने का भी प्रयास हुआ है जो अत्यंत सफल है ।

४) देश-काल और वातावरण --

१) वातावरण का स्वरूप --

उपन्यास को स्वाभाविक और सजीव बनाने में वातावरण का महत्वपूर्ण योगदान होता है । उपन्यासकार जिस समय और स्थान की कथा उपन्यास में प्रस्तुत करता है, उस काल का सम्पूर्ण वातावरण उसे उपन्यास में प्रस्तुत करना पडता हैं । देश-काल के अन्तर्गत सामान्य तौर से किसी भी देश अथवा समाज की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियाँ, आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज, कुरीतियाँ तथा प्राकृतिक परिस्थिति आदि समझी जाती हैं ।

यदि कोई उपन्यासकार देश-काल का बन्धन नहीं मानेगा, तो उसकी कृति में किसी भी युग की सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण मिलना असंभव है । इसके साथ ही देश काल के चित्रण में सदा इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि वह कथानक के स्पष्टीकरण का साधन ही रहे, स्वयं साध्य न बन जाएँ । वातावरण याने पात्रों का संसार है जिसमें रहकर वे अपने व्यक्तित्व को उद्घाटित करते हैं । पात्रों के व्यक्तित्व का चित्र उनकी बातचीत से हमारे सामने स्पष्ट हो जाता है, किन्तु वे पात्र जिस परिस्थिति और वातावरण में रहते है, जब तक उनका वर्णन न किया जाएँ, तब तक चित्र में पूर्णता नहीं आती । इसलिए यह आवश्यक है कि स्थान और काल का पूरा चित्र दिया जाएँ, जिसमें कथानक की घटनाएँ घटित होती हुई दिखाई जाती है ।

वातावरण निर्मिती में पात्रों की भाषा भी प्रमुख साधन है । सामान्यता: सभी साहित्यिक विधाओं में पात्रों की भाषा को महत्वपूर्ण स्थान दिया है । आँचलिक उपन्यासों में पात्रानुकूल भाषा लिखने की प्रवृत्ति बढ रही है, क्योंकि इनमें स्थानीय रंगों की प्रचुरता होती है ।

२) देश-काल के भेद --

देश और काल को दो भागों में विभाजित किया जाता है -- प्राकृतिक और सामाजिक। सामाजिक वातावरण के अन्तर्गत प्राय: सामाजिक दशा का यथार्थ चित्रण किया जाता है। इसमें यह स्पष्ट किया जाता है कि किसी काल-विशेष में किसी विशिष्ट समाज में कौन-कौन-सी परिस्थितियाँ थीं। इसके अन्तर्गत पात्रों के आचार-विचार, वेश-भूषा, रहन सहन आदि के ढंग सम्मिलित हैं। प्राकृतिक वातावरण के अन्तर्गत पशु-पक्षी, सरिता, निर्झर, गुहा, पहाड, उद्यान, वनस्पति आदि की गणना की जाती है। इन प्राकृतिक दृश्यों का वातावरण के निर्माण में विशेष योगदान होता है।

३) देश-काल और स्थानीय रंग --

स्थानीय रंग से हमारा तात्पर्य `लोकल कलर` से है। स्थानीय रंग का महत्व दो कारणों से बढ जाता है। एक तो यह कि इसके होने से उपन्यास में प्रभावात्मकता आ जाती है तथा दूसरे यह कि उसकी कृतिमता नष्ठ हो जाती है और स्वाभाविकता बढ जाती है। ये ही कुछ कारण हैं जिनके लिए उपन्यासों में स्थानीय रंग देना आवश्यक समझा जाता है। प्राय: सभी आँचलिक उपन्यासों के लिए यही बात कही जा सकती है। वस्तुत: स्थानीय रंग के समावेश से उपन्यास में एक सजीवता और ठोस पन आ जाता है। काल्पनिक कथानक भी स्थानीय रंग के कारण वास्तविक बन जाता है।

४)` कब तक पुकारूँ ` उपन्यास के देश-काल और वातावरण में आँचलिकता --

देश-काल और वातावरण का चित्रण आँचलिक उपन्यास का आवश्यक तत्व है। सामाजिक उपन्यासों में भी देश-काल का चित्रण किया जाता है। लेकिन आँचलिक उपन्यास में अँचल विशेष के परिवेश का चित्रण रहता है। यहाँ डॉ. रांगेय राघव के ` कब तक पुकारूँ ` उपन्यास के देश-काल और वातावरण का विवेचन प्रस्तुत किया जाता है --

` कब तक पुकारूँ` यह उपन्यास राजस्थान के भरतपुर जिले के ` वैर ` नामक

ग्राम से सम्बन्धित है जो आगरा के नजदीक थोडी दूर पर स्थित है। यहीं पर नटों की एक करनट नाम की जाति निवास करती है। इन लोगों को खानाबदोश और जरायम पेशा जातियों में वर्गीकृत किया जाता है। स्वयं लेखक ने लिखा है -- "करनट खानाबदोश होते है, पर उनमें बाकी नटों के से कला-करतब नहीं चलते। नटों की औरते घूंघट भी खींचती है और खोलकर भी नाचती है। दस-दस घडे सिर पर रख लेती हैं और फिर कमर हिलाती है। इनके मर्द बाँस पर चढकर तरह-तरह के खेल दिखाते है। करनटों में ये खेल नहीं चलते। करनट और बाकी नट भी डेरों में रहते है। पर इस गाँव में कुछ और बात है। यहाँ करनट भी खेल दिखाते है। किसी राजा के बारे में कहा जाता है, उसने पडोस के राज्य में चोरी कराते रहने को नटों को बस्ती बसा लेने का अधिकार दे दिया था, जो अभी तक हैं। अंग्रेजी राज्य बनने पर राजाश्रय हट जाने से यह नटों की बस्ती हल्की रहती है। करनट इधर-उधर कमाने चले जाते हैं।"[१]

वैसे तो यह जाति पूरे राजस्थान में दिखाई देती है, परन्तु इस अँचल में पाई जानेवाली करनट जाति अपनी विशिष्टता रखती है। "झील", "अधूरा किला" और "करनटों के डेरे" आदि के जिस देश-काल का चित्रण इस उपन्यास में हुआ है वह आज भी वहाँ मिलता है। सम्पूर्ण कथा "अधूरे किले" के इर्द-गिर्द चक्कर काटती है। इसीलिए लेखक ने पहले इसका नाम "अधूरा किला" ही रखा था।

सुखराम (कथा नायक) करनट अपने आपको इस किले का असली मालिक मानता है और उसका कहना है कि वह इस किले से मारने के डर से भागी हुई ठकुरानी के पुत्र की चौथी पीढी का आखिरी ठाकुर है। "अधूरे किले" का मोह ही सुखराम को कहीं नहीं जाने देता और इसी कारण यह सुन्दर आँचलिक उपन्यास बन पडा है। उपन्यासकार ने सम्पूर्ण उपन्यास में स्थल-स्थल पर ग्राम के सम्पूर्ण वातावरण का सच्चा चित्रण करने का प्रयास किया है। गाँव की

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - (पृ.३) - भूमिका से उध्दृत।

नीरवता, भागदौड करती हुई गाय और भैंसे, उद्योग में व्यस्त लोगों तथा हवा के थपेडों से लहराती हुई झील आदि प्रस्तुत उदाहरण में सजीव हो उठे है। जैसे --

" वहाँ एक नीरवता छाई रहती और दिन में कभी-कभी गायें और भैंसें वहाँ पेडों की छाया में बैठकर जुगाली किया करतीं। सब अपने - अपने धन्धों में लगे रहते।.... दूर तक यहाँ झील झाई मारती, हवा के थपेडों में ऐसी लहर मारती कि जैसे कोई झीनी चादर चली जा रही हो और अब वह उठ जाएगी, पर ऐसा नहीं होता।" [१]

प्रकृति का यह परिवेश ग्रामीण अँचल का यथार्थ चित्र अंकित करता है। कथानायक सुखराम अपने डेरों में जो गाँव से दूर जंगल में स्थित है वहाँ की प्राकृतिक पृष्ठभूमि का यथार्थ चित्र लेखक के शब्दों में दृष्टव्य है --

" जब हम जंगल में पहुँचे तो सामने धुआ उठता हुआ दिखाई दिया। मैंने कहा :" यह क्या है ?"

" यह हमारी बस्ती है।" सुखराम ने कहा।

" मैंने देखा छोटे - छोटे घर थे। और साँझ उस जंगल से बस्ती को चारों ओर से घिराव डालकर दबाए ले रही थी। शायद ही दस घर हों। मैंने सोचा - यह संसार कितनी तरह का है ? कहीं बम्बई की भीड है, कहीं आदमी ऐसे भी सन्नाटे में भी रहकर उम्र गुजार देता है ? सामने एक बडा-सा कुआँ था। मै उसकी ओर बढा, पर वहाँ पहुँचकर ठिठक गया। एक बच्ची, लगभग तेरह या चौदह वर्षों की, वहाँ पानी सींच रही थी, वह ऊँचा घाघरा और फरिया पहने थी। फरिया इस वक्त उसके कन्धो के नीचे पडी थी।" [२]

उपर्युक्त उध्दारण के माध्यम से प्रकृति के परिवेश के साथ-साथ वहाँ की

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.७।

२ वही पृ.१०।

बस्ती और वेशभूषा की तरफ संकेत हुआ है। इसतरह करनटों के सामाजिक जीवन की भी अभिव्यक्ति मिली है। आंचलिक उपन्यासों में वातावरण का अधिक महत्व होता है, क्योंकि वह अन्य उपन्यासों में चित्रित वातावरण से विशिष्ट होता है। लेखक ने वातावरण चित्रण को न केवल वातावरण चित्रण के लिए ही किया है बल्कि उनमें एक संदेश है --

" केवल दूर झील आज कुछ कह रही है। हवा का तर झोंका उसका संदेशा ला रहा है। कुत्तों और सियारों की कर्कश आवाजें मेरे कानों में उतर रही हैं, जैसे रात की अधियारी पुकार रही है।" १

लेखक ने इस उपन्यास में स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व एवं दो वर्षों पश्चात तक की कथा कही है। आजादी के पहले निम्न जातियों की स्थिति बड़ी शोचनीय है। उनका घोर शोषण ही नहीं किया जाता था बल्कि गाँव से बाहर एक हिस्से में रखा जाता था। यही स्थिति इस गाँव की है। वहाँ की शुद्र-जातियों का चित्रण जाति-भेद का आदर्श चित्र प्रस्तुत करता है --

" चमरवारा गाँव के बाहर के हिस्से में था। इसके बाद फिर मंगियों के सूअर डोलते ही दिखाई देते हैं। वहाँ मंगियों की बस्ती थी। चमार ढेढ कहलाते थे, पर मंगियों से उतनी ही नफरत करते थे, जितनी ऊँची जात वाले चमारों से। ... उनके घर छोटे-छोटे थे, घिरावदार थे, छप्पर उनके घरों पर काले पड गएँ थे और देखकर हीअंदाज होता था कि यह हिस्सा कितना दरिद्र था। कच्चे दगरों पर मोटे-मोटे पेट के नंगे बच्चे धूलि में खेल रहे थे। चमारियाँ मोटे कपडे का रंग उडा लहंगा पहनतीं और उनके माथे पर मोटी फरिया होती।....गाँव के कुत्ते भी इन्सानों की जात की तरह जाति-भेद मानते हैं, तभी वे किसी दूसरे मुहल्ले के कुत्ते को नहीं आने देते। ....दीवारों पर बने सोना सरवन कुमारों के अतिरिक्त कहीं-कहीं गेरू का हाथी भी बना हुआ था और पीपल के चार पत्तों

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.३५।

का पेड भी चित्रित था ।.... उनके कंडो को कोई चुरा न ले जाएँ, इसलिए उनपर चित्र बना दिए गएँ थे ।" १

इसी भाग में उनकी जाति पंचायत होता है, जिसमें स्त्रियाँ भी सम्मिलित होती है । जातीय परिवेश में आँचलिकता स्पष्ट देखी जा सकती है । करनटों के जीवन में नैसर्गिकता है । सुखराम के साथ कजरी, हिरनी की तरह छलांगे भरती है, कहीं पर उसे आत्मार्पण करती है, कहीं पर उसे प्रताडित करती है परन्तु उस प्रताडना में भी मन मधुरिमा लिपटी हुई है । सुखराम के साथ पुन: प्यारी आ जाती है, तब उसका पारिवारिक - परिवेश थोडा अधिक विस्तृत हो जाता है परन्तु दोनों पत्नियों के होते हुएँ भी उसके जीवन में कहीं विषाक्तता नहीं आयी है । दोनों पत्नियाँ कभी उससे कभी बात करती हो वह कभी-कभी कह भी उठता है, जिसमें माछा के आँचलिक परिवेश की तरफ संकेत हुआ है --

" आँच तेज कर दे परमेसुरी । सोने दोगी कि यहाँ से हट जाऊँ ? कांय-कांय-कांय मंचा रखी है । हे भगवान । किसी को दो मत दीजो । कै तो आपस में क्लेस करके चैन नहीं लेने देगी, कै मिल के उसी को रखा जायगी । एक से ही भरपाया था, अब तो दो हो गई ।" २

यह बात उसने प्रेमवश ही कही है क्योंकि प्यारी और कजरी में कहीं 'सौती डाह' नहीं है । वैसे भी 'सौती डाह' की स्थिति तक पहुँचने से पहले ही प्यारी मर जाती है ।

लेखक ने राजस्थान कीआदिवासी, जरायम पेशा करनट जाति का सुन्दर आँचलिक जीवन प्रस्तुत किया है । करनट जाति खानाबदोश होती है । वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते है, परन्तु जहाँ इनका समूह होता है, वहाँ वापिस लौट जाते है । भरतपुर के इलाके में यह करनट जाति अधिक मात्रा में दिखाई देती है जो सभ्य समाज की प्रताडनाओं से पीडित है । देश के आजाद

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.१६४ ।

२ वही पृ.३७० ।

होने के बाद इन लोगों में परिवर्तन आया है, क्योंकि सरकार ने जरायमपेशा कानून बना दिया है, जिससेकिसी भी व्यक्ति को बिना कारण गिरफ्तार नहीं किया जा सकता। लेखक ने स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व करनटों के जीवन का जो चित्र प्रस्तुत किया, वह अत्यंत कारुणिक, शोषित और उत्पीड़ित रूप में है। उनपर अनेक अत्याचार किये जाते थे। यही नहीं सम्पूर्ण अछूत वर्गों के साथ यह शोषण और उत्पीडना की बात हो रही थी। इस तरह कब तक पुकारें अछूतोंके युगोंयुगों से पीड़ित मन की पुकार है।

उपन्यास में करनट समाज, असभ्यता और प्रकृति का आँचल तीनों परस्पर सहचर रूप में चित्रित है। करनट समाज गाँव से दूर निवास करता है, जहाँ पहाड है। पहाडों के बीच स्थित भाग को नला भी कहते है, जिसके दोनों ओर सघन वृक्ष खडे होते हैं। करनट लोग इसी वन में रोज, हिरन आदि जानवरों को पकड कर लाते है और उसका मांस खाते है। इन लोगों के मकान छोटे-छोटे होते है और अत्यंत छोटी बस्ती होती है। करीब दस-पन्द्रह मकानों का समूह बनाकर डेरों का निर्माण करते हैं। लेखक ने सहानुभूति के साथ उनके जीवन का चित्र प्रस्तुत किया है। जैसा कि लेखक ने स्पष्ट किया है कि वह अपने पाँव के फोडे पर इलाज करने आया था लेकिन उसे अब ऐसा लगने लगा कि वह इन लोगों का अध्ययन करने को ही आया है।

प्रकृति के उन्मुक्त वातावरण में रहने से करनटों में दब्बूपन नहीं आता। वे प्रकृति से हमेशा संघर्ष करते रहे है, फलस्वरुप इनमें संघर्ष करने का साहस उत्पन्न हो जाता है। सर्दी, गर्मी और वर्षा में प्रकृति का जहाँ कोमल रूप सामने आता है वहाँ उनका कठोर रूप भी। शारिरीक दृष्टि से मजबूत और बलवान होते है। सुखराम का अपने पिता के प्रति यह कथन इस तथ्य की पुष्टि देता है -- " मेरा बाप इस समय बडा गंभीर था। मैंने देखा वह इससमय बडा गंभीर था। इसके सिर पर साफा बँधा हुआ था। मैंने उसे पिट दबाकर लोमड पकडते देखा था, वह भागते रोज को घेर लेता था, वह तीन हाथ में कांटे फेंकती सेही को देता था,

और बिज्जू जैसे सक्त और खतरनाक जानवर को उसने सब के सामने अकेला मार डाला था।" १

सुखराम भी बहादुर है। उसमें ठाकुर का रक्त है और वह अधूरे किले का मालिक होने का दावा करता है। कभी कभी वह राजा बनने के सपने देखता है। उसकी यह स्थिति कजरी स्पष्ट कर देती है, जब वह किले का मालिक होने का दावा करता है --

" जब कभी भैंस के सींग पर ऊँट नाचा।
जब कभी ऊँट के सींग पर भैंस नाची।।
...." अरे मेरे गंगुआ तेली। तू तो राजा भोज बन बैठा।
तू मेरा राजा मैं तेरी रानी। तू है लंगड़ा, मैं हूँ कानी।" २

सुखराम को ठाकुर वंश से सम्बोन्धित करने की कल्पना संभवत: लेखक ने सामन्तीय परम्परा को ध्यान में रखकर ही की है क्योंकि राजस्थान में सुखराम जैसे कितने लोग हुएँ, जो वास्तव में उच्च वंश से सम्बन्ध रखते थे, परन्तु विवशता से उन्हें प्रताड़नाओं में जीना पड़ता था। राजा और सामन्त लोग आपसी ईर्ष्या और अधिकार लोलुपता से एक दूसरे के रक्त के प्यासे हो जाते थे और कमजोर पक्ष को हमेशा दलित किया जाता था। सुखराम भी उसी ठकुरानी का वंशज है जो अपने जेठ और जेठानी के मारने के भय से जंगल में आ जाता है, जो गर्भवती थी तथा जिसका पति जहर खाकर मरा था वह जंगल में ही नटों के बीच उसका प्रसव हुआ --

" जब नटों के यहाँ रहकर ठकुरानी एक बार पड़ोस के ठाकुरों के यहाँ गई तो उन्होंने कहा - तूने नटों का छुआ खाया है अब हम तुझे वापिस नहीं ले सकते।" ३

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.२०।
२ वही पृ.११२।
३ वही पृ.१५।

करनट समाज में ` सेक्स ` का खुला व्यापार चलता है और नारी एवं पुरुष के शारीरिक सम्बन्ध सामाजिकता और नैतिकता से परे हटकर होता है। सुखराम की मौ ` बेला ` अपने पति के लिए अपना सब कुछ अर्पण करने के लिए तैयार रहती है, परन्तु वह भी दूसरे आदमियों के बीच बैठकर मस्ती से शराब पीती है। उसने कई बार अपनी जवानी का व्यापार किया है, केवल पति के लिए। फिर भी पति उसे कभी संतुष्टि नहीं देता है। वह अपने पति को कहती है --

` दरोगा हरनाम मुझे अपनी रखैल बनाकर सारे आराम देने को कहता था, पर तेरे लिए मैंने उसे ठुकरा दिया। जब दरोगा करीम-खाँ ने तुझे गिरफ्तार कर लिया, तब मैंने जीवन का सौदा करके तुझे छुड़ाया था। जब अकाल पड़ा था, तब मेरे और तेरे बच्चे के लिए गाँव में जाकर परायों के संग रातें काट-काट कर कमाकर लाती थी, ताकि तुझे बचा सकूँ। ` [१]

सुखराम प्यारी को पर पुरुष की भोग्या नहीं होने देता। वह उसे बचाने जाता है परन्तु जूतों से पीटकर उसे थाने में बंद किया जाता है। प्यारी ही उसे बचाती है। इसीला की मौत के बाद सोनों अकेली रह जाती है। बेटी के लिए इतना ध्यान रखनेवाली सोनों उसकी ही प्रताड़ना का शिकार बनती है। प्यारी अपनी मौ को भी साफ-साफ कह देती है कि उसे नया पति कर लेना चाहिए। इस सम्बन्ध में एक उदाहरण दृष्टव्य है --

` मुँह में आग लगा दूँगी, प्यारी ने कहा था - जो मेरे इसपे तेरी आँख लगी है, नहीं रह जाता तो किसी को कर ले। बंजर धरती तक पे किसान हल चलाता है, फिर तू तो अभी जन-जन ढेर लगा सकती है। ` [२]

बेटी की मौ को इस तरह फटकर और दामाद पर ही आँख डालना यौन-संबंधी नैतिकता की सीमा का उल्लंघन है। सोनों को प्यारी की यह चेतावनी भी

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.२३।

२ वही पृ.४९।

कितनी मदी है --

" कुछ दिन की बहार है लाडली । फिर मैंने क्या ये दिन देखे नहीं ?"[१]

प्यारी सेक्स को बहुत साधारण रूप में लेती है । उसकी दृष्टि में किसी से भी यौन सम्बन्ध होना पत्नीत्व नहीं है --

" पर नाता जोडना और बात है, मन की होके रहना और बात है ।" [२]

सुखराम और करनटों के राजा की भेंट जेल में होती है । दोनों की दोस्ती गहरी होती है । सुखराम को डर है कि कहीं उसकी पत्नियाँ राजा की ओर आकर्षित न हो जाए, इसीलिए वह राजा से वादा करता है --

" तुम मेरी औरतों पर आँख न डालोगे ।"[३] राजा को भी डर है कि कहीं मेरी पत्नी सुखराम की सुन्दरता देखकर मोहित न हो जाए इसलिए कहता है --

" अबे तेरी औरत तो मुझे न देखेगी । पर मुझे अपनी से जरूर डर हो गया है ।" [४]

यह करनट समाज यौन मान्यताओं, यौन वर्जनाओं, नैतिक धारणाओं की अवहेलना करते दिखाई देते है । प्रेम के अकृतरिम रूप को अभिव्यक्त करके लेखक ने यौन-सम्बन्धों की सहज प्रवृत्ति को चित्रित किया है । यह चित्रण कहीं पर विचित्र-सा लगते हुएँ भी वास्तविक है क्योंकि आदिम जातियों में जो बहुत पुरानी जाति है उनमें यौन व्यापार खुले आम चलता है ।

इसतरह मानव के चिरन्तन मूल्य-प्रेम-का आदिम रूप इन करनटों में देखा जा सकता है । लेखक ने भूमिका में लिखा है --

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.५० ।

२ वही पृ.५३ ।

३ वही पृ.३९५ ।

४ वही पृ.३९६ ।

" मैंने इनकी नैतिकता को समाज का आदर्श बनाकर प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि पाठकों को इसमें सेक्स की जानकारी के रूप में हासिल करना चाहिए कि यह इनमें होता है।" [१]

करनट समाज का भयंकर शोषाण मानवता की जड़े हिला देता है। यह शोषाण प्रारंभ से ही चला आ रहा है। निर्धनता और निरक्षारता के अन्धकार में भटकती हुई यह जाति शोषाण की घुटन से त्रस्त है। जीविको पार्जन के इनके पास कोई साधन नहीं है। औरतें अपना प्यार बेचती है। शरीर का सौदा करने पर भी इनको यातनाओं से मुक्ति नहीं मिलती। सवर्ण समाज इनपर घोर अत्याचार करता है। दरोगा बोल उठता है --

" क्यों बे, यहाँ तुम चोरी-वोरी तो नहीं करते।" [२]

सुखराम को कमीना, चोर, जुआरी, धोकेबाज, झूठे आदि कहकर उसकी उपेक्षा की गई है। परन्तु सुखराम में दया, परोपकार, त्याग, वीरता आदि गुणों की कमी नहीं है। इसतरह करनटों के जीवन का समग्र चित्रण प्रस्तुत करने के लिए लेखक ने परिवेश रूप में उस क्षेत्र की अन्य जातियों को ही लिया है।

उपन्यास की कथा जिस भू-भाग में घटित होती है, वह सम्पूर्ण प्रकृति से लिपटा हुआ है। कहीं पर विशाल हरीतिमा लिए खेत हैं, कही पर गहन सन्नाटा लिए हुए जंगल, जहाँ कभी-कभी जंगली जानवर बघेरे इत्यादि से ही संघर्ष करना पड़ता है। अधूरा किला, दूर से झाई मारती झील आदि आँचलिक छवियों के सुन्दर सजाने दिखाई देते है। थोड़े समय के लिए कथा बम्बई में भी विचरण करती है परन्तु उसका विशेष वितरण नहीं करके लेखक ने उपन्यास को पूर्ण आँचलिक बनाया है। प्रकृति-परिवेश, सामाजिक-परिवेश, पारिवारिक-परिवेश, जातीय-परिवेश और भाषा का परिवेश आँचलिकता प्राप्त किए

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - भूमिका से उध्दृत।

२ वही पृ. ४४।

हुए है। राजस्थान का यह अँचल प्रकृति के रम्य स्थलों में से बिम्बित किया है।

५) भाषाशैली --

१) प्रास्ताविक --

भाषा और शैली दो अलग-अलग विषय है लेकिन अधिकांश लोग इसकी ओर ध्यान नहीं देते। भाषा के तीन गुण होते है -- प्रसाद, माधुर्य और ओज। केवल पद्य में ही नहीं बल्कि गद्य की दृष्टि से भी ये तीन गुण महत्वपूर्ण है। कोई उपन्यासकार जनभाषा का प्रयोग करता है, कोई अभिजात भाषा का प्रयोग करता है, कोई गद्य काव्य की भाषा अपनाता है। ऐतिहासिक उपन्यासकार तत्कालीन वातावरण को सजीव बनाने के लिए अतीत की भाषा का प्रयोग करता है। आँचलिक उपन्यासकार आँचलिक भाषा का प्रयोग करता है। हिन्दी उपन्यास में भाषा शिल्प की दृष्टि से निरंतर विकास हो रहा है और हिन्दी उपन्यास पाठकों को आकर्षित करने में सफल बन पड़ा है।

शैली लेखक के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। लेखक का व्यक्तित्व, उसका जीवन संबंधी दृष्टिकोण, भाव, कल्पना, संस्कार, प्रतिभा आदि पर निर्भर होता है। आशय के अनुकूल शैली होनी चाहिए। तभी लेखक के प्रतिपादन में प्रभाव एवं सघनता पैदा होती है। हिन्दी उपन्यासकारों ने चार प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है -- समास शैली, व्याख्यात्मक शैली, संवाद शैली, और संकेत शैली। उपन्यास के विकास के साथ शैली शिल्प में भी विकास हो रहा है।

२) कब तक पुकारूँ उपन्यास की भाषाशैली में आँचलिकता --

रांगेय राघव के कब तक पुकारूँ उपन्यास की भाषा पर करनटों की भाषा का संस्कार है। उपन्यास में इसप्रकार के उदाहरण मिल जाते है। हिन्दी के सामान्य रूप से हटकर बोली रूप का प्रयोग लेखक ने संवादों में नहीं अपितु वातावरण के चित्रण में भी किया है।

अ) `कब तक पुकारूँ` में स्थानीक भाषा का प्रयोग --

`कब तक पुकारूँ` उपन्यास में लेखक ने हिन्दी के परिनिष्ठित रूप को ही स्वीकार किया है । परन्तु स्थानीय बोली की भी एक झलक देखी जा सकती है। स्थानीय रंगत को प्रगाढ करने के लिए आँचलिक उपन्यास मे स्थानीय बोली का प्रयोग किया जाता है/और उसका अति प्रयोग आक्षेप का कारण बनता है । इस उपन्यास में लेखक इस विषाय में सतर्क दिखाई देता है । इसका कारण यह है कि उपन्यास को कथा के तथ्य सुखराम के द्वारा बताए गए हैं और उसकी अभिव्यक्ति स्वयं लेखक की है । वह कथा के साथ-साथ टिप्पणियाँ भी करता जाता है,जो शुध्द परिनिष्ठित हिन्दी में है । परन्तु पात्रों के आपसी वार्तालाप में प्रयुक्त भाषा जो कि लेखक की भाषा में अन्तर रखती है । भाषा में स्थानीय बोली का पुट मिलता है । उपन्यास की कहानी गाँव,अधूरा किला,झील और वत्यांचल में स्थित करनटों के डेरों में विचरण करती है । स्थानीय भाषा का अति प्रयोग किया जाता तो शायद पाठक समझ नहीं पाते क्योंकि करनट - करनटियों की भाषा दुरूह और दुर्बोध बन जाती । आँचलिक भाषा का उदाहरण दृष्टव्य है --

" एक ने कहा: ` ऐ भटू । इत्ते लोगों ने खडे-खडे घेरा मगर मजाल कि लाठी देह पे लगने दी हो । यों फिरकनी-सा बन गया बीच मैदान में देखने को लगता कि अब दो टूक हो जायेगा ,पर वह लच्क मारता कि आँखे संग काढ के ले जाता, मैं हिरनी-सी रह गई । दैया रे दैया । .... पर के लाठी चली तो दोनों ओर के ज्वान योंई महरा-महरा के गिरे । सौगन्ध है,वैसी लडाई देख के धिन हो गई । आज तो कोई बाके को देखता । होय कैसी-कैसी दांती भींच-भींच के खिसियाया, पे एक न चली ।" [१]

---

१ डॉ.रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.१९२ ।

सुखराम प्यारी और कजरी को लेकर दूसरे प्रान्त में जाने की सोचता हुआ कजरी से कहता है --

" वहाँ तुम दोनों जने-जने की नहीं, सिर्फ मेरी होगी ।"[१]

यहाँ "जने-जने" शब्द से स्थानीयता परिलक्षित होती है । प्यारी रूस्तम-खाँ के पास पहुँचकर साबुन से नहाने लगती है और सुखराम उसको "साबन" बोलता है जो प्राय: ग्रामीण समाज में इसीतरह उच्चारित किया जाता है ।

सुखराम प्यारी के सामने कजरी के न ले जाकर बहाना बनाना चाहता है कि वह बीमार है, तब कजरी अपनी बीमारी की बात सुनकर कहती है --

" बीमार पड़े मेरी सौत । मैं काहे को पड़ूँ ? सो ढाल ही दी है । भगमान है ।"[२]

यहाँ पर कजरी "बिमार" को "बीमार", "हालदी" को "ढालदी" और भगवान को "भगमान" बोलती है, इससे आँचलिक उच्चारण की ओर संकेत प्राप्त होता है । इसी तरह सिढ़िहयाँ (सीढ़ियाँ), जिनावर (जानवर), सैंकार (अलंकार), बखत (वक्त), पून्यों (पूर्णिमा), सामरिया (सावरियाँ), राच्छी (साक्षी), दरौपदी (द्रौपदी), न्याव (न्याय) इत्यादि कई शब्द स्थानीय उच्चारण से आँचलिक बन गए हैं । यहाँ तक अंग्रेजी शब्द, उर्दु शब्द और स्थानीय शब्द अँचल में ग्रहण कर लिए गए हैं ।

१) <u>अंग्रेजी शब्द</u> -

मैन (पृ.४६८), क्राइस्ट (पृ.४७१), वैरी गुड (पृ.४७५), वेल (पृ.४७८), क्वार्टर (पृ.४८१), रेमडीन (रामदीन)(पृ.५०७), मैन(पृ.५१२), डैडी (पृ.५१४), टोस्ट (पृ.५१४), गुड (पृ.५२८), लैम्प (पृ.५५५), गेट आऊट (पृ.५५८) आदि ॥

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.९९ ।

२ वही पृ.१०३ ।

२) उर्दु शब्द --

ताज्जुब (पृ.४५), मुहब्बत (पृ.८८), उम्र (पृ.१०१), तावीज (पृ.१०७), बलमा (पृ.१९५), उस्ताद (पृ.२१३), कुदरत (पृ.२६७), बादशाह (पृ.२६७), रिक्जमत (पृ.२६७), शहजादा (पृ.२६६), शहजादी (पृ.२६७), तस्वीर (पृ.३५९) आदि ।

३) स्थानीय शब्द --

झजडियाँ (पृ.१९), परमेसुरी (पृ.५५), कढीसाएँ (पृ. ८५), धुप्प-अंधेरे (पृ.१११), पौबारह (पृ.१११), कटखना (पृ.११७), खूसट - (पृ.१५७), मैना (पृ.१९३), वजमारा (पृ.३४९), कबस (पृ.४८०) आदि ।

इन शब्दों का अँचल में लोगों की बोली में समन्वय हो गया है और इस सामंजस्य के कारण ` आँचलिक अभिव्यक्ति ` के सौष्ठव की अभिवृध्दि हो गई है ।

ब) ` कब तक पुकारूँ ` में अश्लील तत्व की सफल अवतारणा --

उपन्यासों में अश्लील तत्व की अवतारणा कई प्रकार से हो सकती है । आलोच्य उपन्यास में करनट-करनटियों के संवादों में अश्लील तत्व की अवतारणा हुई है, परन्तु वह पाठक को खटकती नहीं है, क्योंकि करनट एक असभ्य समाज है, उनमें अक्सर गालियाँ दी जाती है । निम्न समाज में अपशब्द बिना हिचकिचाहट के प्रयोग में लाते हैं और कभी-कभी तो औरतें भी आदमियों की तरह गालियाँ निकालने लगती है । उपन्यास में गालियों का प्रयोग इतना भद्दा नहीं है जिससे उसे हम निन्दनीय कह सके । समाज की स्थिति को ध्यान में रखने पर स्पष्ट हो जाता है कि गालियों का प्रयोग अत्यंत स्वाभाविक स्थिति में हुआ है । कजरी सुखराम से कहती है --

" मुझे तो तू ही उल्लू का पट्ठा दिखाई देता है।" [१]

प्यारी भी सुखराम से कजरी के बारे में कहती है --

" उस दईमारी का मन आ गया होगा तुझ पै।" [२]

कजरी प्यारी से मिलना नहीं चाहती है --

" मेरा-तेरा संसार है। वह निगोडी-छिनाल बीच में कौन है ? मैं उसे कभी नहीं सह सकूँगी। तू मेरा मरद ... पर उस नागिन के मुँह पै भी न थूकूँगी।" [३]

साले, धिक्कारे राजा, मरद ड्योढी का कुत्ता, हरामजादी, जहरीली नागिन, डरती है मेरी जूती, कुत्तियाँ, साली बंदरिया, उल्लू की पट्टी, शेखचिल्लिन, रंडी, आदि गालियों का प्रयोग हुआ है, जो करनट समाज का यथार्थ और सच्चा चित्रण करने के लिए सार्थक सिध्द हुई है।

क) " कब तक पुकारूँ " में मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग --

/ सुखराम के पिता के मन में वंशाभिमान की भावना थी, उसपर व्यंग्य करती हुई उसकी पत्नी बेली -- कहती है --

" तूने झोंपडी में रहकर महलों का सुपना देखा है।" [४]

इसतरह लोकोक्तियों का सुन्दर प्रयोग हुआ है जिसमें सुखराम के पिता के जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत हो जाता है / अनेक बार प्रणय निवेदन करने पर भी सुखराम नहीं समझाता है तो कजरी चिढकर कहती है --

" तुझे तो उसने कारा कमरा बना दिया है सुरे। इसमें भी गहरे अर्थ की अभिव्यंजना हुई है। इसतरह का बतंडग करना, जब सीधी अंगुली घी निकले तो

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.७६।
२ वही पृ.८१।
३ वही पृ.९८।
४ वही पृ.२२।

उँगलियाँ टेढी क्यों करें, लातो के देव बातों से सीधे नहीं होते, जुआ के डर से लहंगा छोडा जाएँ, छाती फुला फुला कर गुनगाना, वाणियाँ पानी छानकर पीता है, पर लहू अनछाणा पीता है टेढी खीर बनना, नकेल भी डाले रहे और उल्लू भी बनाएँ, गाडी देख के लाडी के पाँव फूलना, बगुला अगर भगत बनेगा तो भी बिलैया (बिल्ली) भगतिन नहीं छोडेगी, तिरलोकी दीखना, बिरदावन पहुँचना, रांग रंडापा तो तब काटे जब रहुँआ उसे काटने दे, दिया बले मरद मानुस घर में भले इत्यादि कई कहावतों और मुहावरों का प्रयोग लोक जीवन को सच्चाई के साथ प्रतिबिम्बित करता है। परन्तु लेखक ने आँचलिक मुहावरों का बहुत कम प्रयोग किया है।

ड) `कब तक पुकारूँ` में लोकगीतों का प्रयोग --

लोकगीत लोकजीवन का सच्चा गान होता है और आँचलिक जीवन की अभिव्यक्ति लोकगीतों के माध्यम से देखी जा सकती है। `कब तक पुकारूँ` उपन्यास में लोकगीतों का अनुदित रूप मिलता है। एक अनुदित लोकगीत प्रस्तुत है --

`` आज चाँदनी है। आज मै तेरे पास सोऊँगी, मुझे
चन्दा से डर लगता है।`
` ओ चन्दा की सी कामिनी, तू जिसमें से जन्मी है, तुझे
उसी से डर क्यों लगता है बावरी।`
ओ साजन, मुझे हँसुली बनवादो, इस चन्दा में इतना
सोना-चाँदी है, इन्हें जाकर कटवा दो न ?
दारोगा क्या तुम्हें इसके गहने बनवाने पर भी
पकड लेगा ?
`प्यारी, वह बडा निरदयी होता है। वह मेरा दुश्मन नहीं है, वह चन्दा का रखवाला भी नहीं है, असल में उसकी आँख तेरे जोबन पर लगी है।` [१]

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.१९-२०।

लोकनायिका की सुन्दरता चंद्रमा के समान है, मानों वह चंद्रमा को चीर कर निकाली गई है, परन्तु वह चंद्रमा से डरकर नायक के पास सोना चाहती है। साथ ही चंद्रमा को कटवा कर गहने बनाने की कोमल कल्पना करती है। नायक डर जाता है क्योंकि चंद्रमा को काटेगा तो पुलिस उसे पकड़ लेगी और दरोगा तो वैसे ही नायिका के यौवन पर विमोहित हो रहा है। करनटों के जीवन के ऐसे कई सुन्दर चित्र इन गीतों के माध्यम से अंकित हुए हैं। एक अन्य गीत भी द्रष्टव्य है--

" ऐरे मैं आग में जली जा रही हूँ, हाय मेरे बलम, तू कहाँ चला गया। पहाड के धौ सुख गए हैं। ऐसे मेरी चाहना भी सुख गई है, पर मेरा हिया देख, इसमें क्या है ? तू पर्वत पै धूनी रमाएँ बैठा है। जोगी आ मेरे मन की धूनी तो देख जा।

" तेरी धूनी मुझे जलाती है तो मानव जलता है, यह धूनी जलती है तो मन गलता है। प्यारी ! तेरे बिना मुझे जोग भी नहीं सुहाता।"

" प्यारे ! मैं जानती हूँ, तुझे मुझसे प्रीत नहीं है। तुझे तो चमकती बिजलियों से सूनापन लग रहा है। तू जब मोरनी के पास मोर नाचता देखता है तो तेरी हूक उठती है। हिरनी के पीछे दौड़ता हिरन तेरा काम जागता है। ओ काम के मतवाले तू मुझे प्रीत का धोका क्यों देता है। तू तो फिर ऐसे ही चला जायेगा जैसे ये सावन के मेघ चले जाएँगे, फिर जब सरद आएगो तब मैं और आसमान दो ही तो धरती पर आसूँ गिराने को रह जायेंगे।

मुझसे कसम ले ले प्यारो।.... मैं जोगी तो तेरे लिए बना हूँ, प्यारी तू हो। मेरा सब कुछ है।"[१]

---

१ डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.६५।

इस तरह` कब तक पुकारूँ` में लोकगीतों का चित्रण हुआ । और सभी को लेखक ने शुध्द` परिनिष्ठित हिन्दी में रूपान्तर किया है । वस्तुत: लोकमानस का बिम्ब लोकगीतों में दिखाई देता है ।

इ)` कब तक पुकारूँ` में करनटों की लोककथाएँ --

इस उपन्यास में कई लोकथाओं का समग्र चित्रण हुआ है परन्तु कजरी द्वारा कही गई लोककथा महत्वपूर्ण है, जो करनटों के जीवन पर प्रकाश डालती है । सुखराम और कजरी दोनों किले को देखने के लिए जाते है, वहाँ के पहाड पर एक छतरी देखते है । लोक-कथा के रूप में चली आ रही छतरी की कहानी को कजरी कहती है ` किसी समय एक राजा था, जिसने दोनों पहाडों के बीच रस्सी बाँधकर एक पहाड से दूर पहाड पर जानेवाले को आधा राज्य देने की घोषणा की । एक नटनी उस रस्सी को आधे तक पार कर चुकी थी, तब राजाने रस्सी कटवा दी कि कहीं आधा राज्य न देना पडे ।` [१]

इसी तरह उपन्यास में अन्य भी लोककथाएँ दिखाई देती है ।

संक्षेप में ` कब तक पुकारूँ` उपन्यास भाषाशैली की दृष्टि से आँचलिक है । उसमें जगह जगहों पर स्थानीक भाषा का प्रयोग किया है जो करनटों से मेल-जोल खाती है । उसमें अंग्रेजी ,उर्दु,स्थानीय शब्दों का प्रयोग किया है । साथ-ही साथ इसमें आँचलिकता की दृष्टि से अश्लीलता दिखाई देती है,जिससे यह हूबहू चित्रण जान पडता है । उपन्यास में मुहावरों एवं वहाँ की स्थानीय लोकोक्तियों का प्रयोग अनुठे ढंग से किया है । वहाँ के लोकगीतों का भी प्रयोग जगह-जगह पर हुआ है। करनटों की लोककथाओं का चित्रण भी हुआ है जिससे भाषाशैली की दृष्टि से यह उपन्यास आँचलिक है इसमें शक है ही नहीं ।

---

१ डॉ.रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ - पृ.११४ ।

(६) उद्देश्य --

उपन्यास कथा मात्र नहीं है वह जीवन की व्याख्या है। उपन्यासकार इसके माध्यम से मानव जीवन के समस्याओं का विवेचन करता है। आधुनिक युग में उपन्यास को अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम माना जाता है। आज यह सम्पूर्ण मानसिकता को छुते हुएँ समाज के विभिन्न पहलूओं का चित्रण करता है। पहले उपन्यास को केवल मनोरंजन का साधन मात्र मानाजाता था लेकिन धीरे-धीरे उसके उद्देश्य तत्व के क्षेत्र में विस्तार हो रहा है।

कब तक पुकारूँ में लेखक ने वर्ग संघर्ष का चित्रण किया है। गरीब और छोटी जाति पर उँची जाति के लोग अत्याचार करते है। उपन्यास मे उत्पीडित और शोषित नटों का जीवन चित्रित है। उपन्यास में सुखराम ऐसा पात्र है जो वंश परम्परा की दृष्टि से ठाकुरों से अर्थात सामन्तो से सम्बन्ध रखता है किन्तु जिस समाज के बीच वह रहता और पहँचाना जाता है वह दूसरा वर्ग है, जो उपेक्षित है। इसी नाते सुखराम दोनों ही प्रकार के संस्कारों से युक्त है। सुखराम एक व्यक्ति के रूप मे उदात्त है किन्तु उसके साथ जो परिवार है वह दूसरे वर्ग से सम्बन्धित है जिसके लिए उसे जूझाना पडता है। इसी में उसके मन में नैतिक मान्यताओं को लेकर संघर्ष होता है जिसका चित्रण उपन्यास में है।

लेखक की मान्यता है कि, ईसा पूर्व यूनान में जैसे पेगन जातियाँ असभ्य थी, उनमें नैतिकता के कोई बन्धन नहीं थे। उसी तरह प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित करनटों में `सेक्स` और `नैतिकता` के कोई बन्धन नहीं है। इनमें `सेक्स` के आधार पर कोई बुराई नहीं माना जाती। वे `सेक्स` के सम्बन्ध में आजाद होते है। ठाकुर वंशीय सुखराम करनटों में रहते हुएँ भी इन सभी बातों को पसन्द नहीं करता। वह उच्च वर्गीय संस्कारों का तथा नएँ मूल्यों को स्थापित करना चाहता है। अभिजात समाज के समान करनटों में सामाजिक नियमावली

नहीं होती । शराब पीना, चोरी करना तथा जुआ खेलना उनके लिए नैतिकता है । इन गुणों का न होना उनके यहाँ अस्वाभाविक माना जाता है । सुखराम इन सभी से परे है, इसलिए करनटों की उसकी ओर देखने की दृष्टि अलग ही है ।

अभिजात समाज में नर-नारी सम्बन्ध प्रधान रूप से पति-पत्नी सम्बन्ध शारीरिक भूक की तृप्ति एवं जनन प्रक्रिया के हेतु होते है । और इसमें सामाजिक नीति मूल्य एवं संस्कारों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है । परन्तु करनटों में नारी पति के होते हुएँ भी अन्य पुरुषों से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करती है । नएँ सम्बन्ध स्थापित करके तथा पुराने तोडने में वह स्वतंत्र्य रहती है । उनके ये सम्बन्ध शारीरिक भूक की तृप्ति के लिए नहीं होते बल्कि पेट की आग बुझाने के हेतु होते है । इस समाज में तन की अपेक्षा मन की शुध्दता को अधिक महत्व दिया जाता है । प्यारी शारीरिक रूप में रूस्तम-सौ के घर रहती है परन्तु मन से वह सुखराम को ही चाहती है । करनटों की ये मान्यताएँ ऐसी है जिसके कारण सुखराम को अभिजात संस्कारों से जुझना पडता है । इसमें लेखक ने उदात्त मूल्यों को व्यक्त किया है ।

इस उपन्यास में लेखक का मुख्य लक्ष्य नटों के जीवन का चित्रण ही है । फिर भी प्रसंगानुकूल चमारों, ठाकुरों, जमींदारों और सिपाहियों आदि का वर्णन अत्यंत स्वाभाविक बन पडा है । लेखक का आग्रह यह रहा है कि इस उपेक्षित वर्ग में भी अन्य लोगों की तरह सामान्य लोग होते है, जो अपनी सारी कमजोरियों के बावजूद मनुष्य की महानता के अंश को छिपाए रहते है ।

`कब तक पुकारूँ' उपन्यास में लेखक अपने उद्देश्य के चित्रण में पूर्णरूप से सफल हुआ है ।